٣٠٠ حديث من الصحيحين - هندي

बुख़ारी और मुस्लिम की 300 हदीसें

جمعية الدعوة بالزلفي

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

234 هاتف: ٤٢٢٤٤٦٦ ٠١٦ ـ فاكس: ٤٢٢٤٤٧٧ ٠١٦

300 حديث من الصحيحين - هندي

बुखारी और मुस्लिम की 300 हदीसें

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات في الزلفي
Tel: 966 164234466 - Fax: 966 164234477

300 حديث من الصحيحين

أعده وترجمه إلى اللغة الهندية

جمعية الدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الثانية : ٨ / ١٤٤٢ هـ

ح **المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي**

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

300 حديث من الصحيحين - الزلفي، ١٤٤١هـ

١٣٢ ص ؛ ١٢×١٧ .سم

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٢٤٣-٢٢-٠

١- الحديث – جوامع الفنون أ- العنوان

ديوى ٢٣٧,٣ ١٤٤١/٢٢٧

رقم الإيداع: ١٤٤١/٢٢٧

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٢٤٣-٢٢-٠

300 حديث من الصحيحين

बुखारी व मुस्लिम की ३०० हदीस

1- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَلِمَتَانِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ ، حَبِيْبَتَانِ إِلَى الرَّحْمٰنِ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ». {مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ6406، 2694}

१. अब् हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो कलिमे जुबान पर हलके हैं, तराजू में वज़नी हैं, रहमान के नज़दीक पिय हैं। सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम (बुखारी६४०६-मुस्लिम २६६४)

2- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي ؟ قَالَ: «أُمُّكَ» قَالَ: ثُمَّ مَنْ ؟ قَالَ : «أُمُّكَ» قَالَ: ثُمَّ مَنْ ؟ قَالَ: «أُمُّكَ» قَالَ: ثُمَّ مَنْ ؟ قَالَ: «ثُمَّ أَبُــوْكَ» {مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ5971، 2548}

२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार (पात्र) कौन है? आप ने फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां,

पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारे बाप। (बुखारी ५९७१-मुस्लिम २५४८)

3– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الحَدِيْثِ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْه 6066}

३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बदगुमानी से बचो, निसन्देह बदगुमानी सबसे झूठी बात है। (बुखारी ६०६६)

4– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مَا يَتَبَيَّنُ فِيْهَا ، يَزِلُّ بِهَا فِي النَّارِ أَبْعَدَ مَا بَيْنَ المَشْرِقِ وَالمَغْرِبِ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ2988,6477}

४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दा बिना सोचे समझ ऐसी बात कह देता है जिसकी वजह से वह जहन्नम में इतनी गहराई में पहुंच जाता है जितनी पश्चिम और पूर्व की दूरी है। (बुखारी ६४७७-मुस्लिम२९८८)

5– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«إِنَّ اللهَ يَغَارُ،وَغَيْرَةُ اللهِ أَنْ يَأْتِيَ الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ اللهُ».{مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ2761,5223}

५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

बेशक अल्लाह को भी गैरत आती है। और अल्लाह की गैरत यह है जब मोमिन अल्लाह की हराम की हुयी चीज़ों को करता है। (बुखारी ५२२३-मुस्लिम २७६१)

6- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ37، 759}

६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने ईमान और नेक निय्यती के साथ रमज़ान में क़्याम किया उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे। (बुखारी३७-मुस्लिम ७५६)

7- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اَلْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا، وَالْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةَ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ1349,1773}

७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक उमरा दुसरे उमरा के बीच के गुनाहो को मिटा देता है और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी १७७३-मुस्लिम १३४६)

8- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اَلتَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 3289، 2994}

८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जमाइ शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाइ आये तो अपनी ताकत भर उसे लौटा दे। (बुखारी ३२८९-मुस्लिम २९९४)

9- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «السَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ وَالمِسْكِينِ كَالمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِ اللّـــهِ ، وَأَحْسَبُهُ قَالَ: وَكَالقَائِمِ الَّذِيْ لَا يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ لَا يُفْطِرُ» {مُــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 6007، 2982}

९. अबू हुरैरा रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेवाओं और यतमीमों के काम आने वाला अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले की तरह है और मेरा ख्याल है कि आपने फरमायाः रात में उस तहज्जुद की नमाज पढने वाले की तरह है जो थकता नहीं है और उस रोज़े दार की तरह है जो बराबर रोज़ा रखे। (बुखारी ६००७-मुस्लिम २९८२)

10- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا يُصِيْبُ الْمُسْلِمَ مِنْ نَصَبٍ وَلَا وَصَبٍ وَلَا هَـــمٍّ وَلَا حَـــزَنٍ وَ لَا أَذىً وَلَا غَمٍّ حَتَّى الشَّوْكَةَ يُشَاكُهَا إِلَّا كَفَّرَ اللهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ».{مُــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 5641,2573}.

१०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी

वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५६४१-मुस्लिम २५७३)

11- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ رَدُّ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ وَإِجَابَةُ الدَّعْوَةِ وَتَشْمِيتُ الْعَاطِسِ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 1240، 2162}

११. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर पांच अधिकार हैं, सलाम का जवाब देना, बीमार का हाल चाल मालूम करना, जनाज़े में हाज़िर होना, दावत को कुबूल करना और छींकने वाले का जवाब देना। (बुखारी १२४०-मुस्लिम २१६२)

12- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ شَهِدَ الْجَنَازَةَ حَتَّى يُصَلِّيَ عَلَيْهَا فَلَهُ قِيرَاطٌ وَمَنْ شَهِدَهَا حَتَّى تُدْفَنَ فَلَهُ قِيرَاطَانِ» قِيلَ وَمَا الْقِيرَاطَانِ قَالَ «مِثْلُ الْجَبَلَيْنِ الْعَظِيمَيْنِ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 1325، 945}.

१२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो जनाज़े में हाज़िर हुआ और नमाज़ पढ़ी तो उसके लिये एक कोरात है, और जो जनाज़े में दफन किये जाने तक हाज़िर रहा उसके लिये दो कोरात है। आपसे पूछा गया कि

यह दो कोरात क्या हैं? आपने फरमाया दो बड़े पहाड़ी के समान। (बुखारी १३२५-मुस्लिम ६४५)

13- عن أبي هريرة رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ قال: «مَا عَابَ النَّبِيُّ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ طَعَامًا قَطُّ إِنِ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ وَإِنْ كَرِهَهُ تَرَكَهُ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 5409، 2064}.

१३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी खाने पर कभी ऐब नहीं लगाया अगर खाना चाहते तो खा लेते और अगर पसन्द नहीं करते तो नहीं खाते थे। (बुखारी ५४०६-मुस्लिम २०६४)

14- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: «حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ، وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 6487}.

१४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जहन्नम इच्छाओं से घिरी हुयी है और जन्नत मशक्कतों से घिरी हुयी है। (बुखारी ६४८७)

15- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ«إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الجُمُعَةِ أَنْصِتْ،وَالإِمَامُ يَخْطُبُ،فَقَدْ لَغَوْتَ»{مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 934، 851}

१५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जुमा के दिन इमाम के खुतबा देने के वक्त में जब तुमने अपने साथी से खामूश रहने के लिये कहा तो हक़ीक़त में तुम ने फुजूल बात की। (बुखारी ६३४-मुस्लिम ८५१)

16- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُـــوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«لَوْلَا أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لَأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ».{مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 887,252}

१६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयन करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर मेरी उम्मत पर कठिन न होता तो मैं उन्हें हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक् करने का हुक्म देता। (बुखारी ८८७-मुस्लिम २५२)

17- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «وَيْلٌ لِلْأَعْقَابِ مِنَ النَّارِ». {مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 165، 242}.

१७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एड़ियों के लिये जहन्नम से बर्बादी है। (बुखारी १६५-मुस्लिम २४२)

18- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَمَا يَخشَى الَّذِيْ يَرْفَـــعُ رَأسَهُ قَبْلَ الإِمَامِ أَنْ يُحَوِّلَ اللهُ رَأْسَهُ رَأسَ حِمَارٍ» {مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 691، 427}

१८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो

नमाज़ में अपने सर को इमाम से पहले उठा लेता है उसके बारे में डर है कि कहीं अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर की तरह न बना दे। (बुखारी ६९१-मुस्लिम ४२७)

19- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«مَنْ غَدَا إِلَى المَسْجِدِ أَو رَاحَ، أَعَدَّ اللهُ لَهُ فِي الجَنَّةِ نُزُلًا ، كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ». {مُـــتَّـــفقٌ عَلَيْهِ 662، 668}

१९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स सुबह व शाम मस्जिद जाता है अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में मेहमान नवाज़ी के सामान तैयार कर देता है जब जब वह जाये। (बुखारी ६६२-मुस्लिम ६६९)

20- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ «آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ : إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وِإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ» {مُـــتَّـــفقٌ عَلَيْهِ 33، 59}

२०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुनाफिक़ की तीन पहचान है जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो वादा तोड़े और जब उसके पास कोई अमानत रखी जाये तो उसमें ख्यानत करे। (बुखारी ३३-मुस्लिम ५९)

21- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا أَسْفَلَ مِنَ الكَعْبَيْنِ مِنَ الإِزَارِ فَفِي النَّارِ». {مُـــتَّـــفقٌ عَلَيْهِ 5787}.

२१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्ह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः टखनों से नीचे तहबन्द का जो हिस्सा लटका हुआ होगा वह जहन्नम में जाने का सबब होगा। (बुखारी ५७८७)

22–عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«اَلْمَلَائِكَةُ تُصَلِّي عَلَى أَحَدِكُمْ مَادَامَ فِي مُصَلَّاهُ الَّذِي صَلّى فِيهِ مَا لَم يُحْدِثْ،تَقُوْلُ:اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ ،اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ»{مُتَّفَقٌ عَلَيْه 445، 649}.

२२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फरिश्ते तुम में से हर किसी को दुआ देते हैं जब तक कि वह अपने नमाज़ पढ़ने की जगह में बैठा रहे और यह सिलसिला उस वक्त तक बाकी रहता है जब तक कि उसको तहारत की ज़रूरत न पड़ जाये फरिश्ते कहते हैं ऐ अल्लाह उसकी मगफिरत फरमा आर उस पर रहम कर। (बुखारी ४४५)

23–عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُوْنَ الجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبٰى»،قَالُوا:يَا رَسُولَ الله،وَمَنْ يَأْبٰى؟ قَالَ:«مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى»{مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 7480، 1835}.

२३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरी उम्मत में से हर कोई जन्नत में जायेगा लेकिन जिसने

इनकार किया सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल इन्कार करने वाला कौन है? कहाः जिसने मेरी परवी की वह जन्नत में जायेगा और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने इनकार किया। (बुखारी ७४८० मुस्लिम १८३५)

24– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا قَالَ الرَّجُلُ لِأَخِيْهِ يَا كَافِرُ ، فَقَدْ بَاءَ بِهِ أَحَدُهُمَا» {مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 6103، 60}

२४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब आदमी अपने भाई को काफिर कहता है तो उन दोनों में से कोई एक इसका (काफिर) कहे जाने का पात्र बन जाता है। (बुखारी ६१०३ मुस्लिम ६०)

25– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ أَحَدِكُمْ، مِنْ أَحَدِكُمْ بِضَالَّتِهِ ، إِذَا وَجَدَهَا». {مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 2675}.

२५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम २६७५)

26– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا، وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا، أَوَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى شَيْءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ؟ أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 54}.

२६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगोगे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम ५४)

27– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: «اَلصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ، وَالْجُمُعَةُ إِلَى الْجُمُعَةِ ، وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ ، مُكَفِّرَاتٌ مَا بَيْنَهُنَّ، إِذَا اجْتُنِبَتِ الكَبَائِرُ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 233}.

२७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा ह शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम २३३)

28– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ شَهْرُ اللهِ الْمُحَرَّمُ،وَأَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الفَرِيضَةِ،صَلَاةُ اللَّيْلِ».{رَوَاهُ مُسْلِمٌ 1163}

२८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम ११६३)

29– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا، تَابَ اللهُ عَلَيْهِ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2703}.

२९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स ने सूरज के उसके पश्चिम से निकलने से पहले तौबा कर ली अल्लाह उसकी तौबा को कुबूल करेगा। (मुस्लिम २७०३)

30– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «جُزُّوا الشَّوَارِبَ وَأَرْخُوا اللِّحٰى،خَالِفُوا الْمَجُوْسَ».{رَوَاهُ مُسْلِمٌ 260}.

३०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

मोछों को छोटा करो, दाढ़ी को बढ़ाओ, मजूसियों की मुखालिफत करो। (मुस्लिम २६०)

31– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَأَنْ أَقُوْلَ : سُبْحَانَ اللهِ ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ، وَاللهُ أَكْبَرُ ، أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2695}

३१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैं सुबहानल्लाह वलहम्दलिल्लाह व लाइलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर कहूं। यह मेरे लिये दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्रिय है जिसपर सुरज निकलता है। (मुस्लिम २६९५)

32– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا ، وَمَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 101}

३२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम १०१)

33– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثَةٍ: إِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ، أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ، أَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُو لَهُ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 1631}

३३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों का सवाब उसे मिलता रहता हैः सदकए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम १६३१)

34– عَنْ أَبِي هُــرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُــوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَقِّنُوا مَوْتَاكُم: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ» {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 916}

३४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों का लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो (मुस्लिम ६१६)

35– عَنْ أَبِي هُــرَيْرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُــوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَــتَــــبَــــوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ».{مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 1291، 3}

३५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (बुखारी १२६१ मुस्लिम ३)

36–عَنْ أَبِي هُــرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُــوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى، كَانَ لَهُ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلُ أُجُوْرِ مَنْ تَبِعَهُ ، لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ

أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا ، وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ،مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ،لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2674}

३६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम २६७४)

37– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وتَعَالَى: أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ ، مَنْ عَمِلَ عَمَلًا أَشْرَكَ فِيْهِ مَعِيَ غَيْرِيْ، تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ».{رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2985}

३७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है मैं शिर्क करने वालों के शिर्क से बेनियाज हूं जिसने कोई ऐसा कर्म किया जिस में मेरे साथ दूसरे को साझी बनाया तो मैं उसको भी छोड़ दूंगा और उसके शिर्क को भी छोड़ दूगा। (मुस्लिम २९८५)

38- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُـــوْلَ الله صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً ، صَلَىَّ اللهُ عَلَيهِ عَشْراً». {رَوَاهُ مُـــسْلِـــمٌ 408}

३८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह उस पर दस बार दरूद भेजता है। (मुस्लिम ४०८)

39- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُـــوْلَ الله صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ، دَمُهُ ، وَمَالُهُ ، وَعِرْضُهُ». {رَوَاهُ مُـــسْلِـــمٌ 2564}

३९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर उस का खून उसका माल और उसकी इज्ज़त हराम है। (मुस्लिम २५६४)

40-عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ،وَمَا زَادَ اللهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلَّا عِزًّا،وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلّهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللهُ».{رَوَاهُ مُـــسْلِـــمٌ 2588}

४०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सदक़ा करने से माल में किसी तरह की कमी नहीं होती और अल्लाह तआला बन्दे को मआफ करने से उसकी इज्ज़त में

बढ़ोतरी कर देता है और जो अल्लाह के लिये झुकता है तो अल्लाह उसके दर्जे को बुलन्द कर देता है। (मुस्लिम २५८८)

41- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:« تَدْرُونَ مَا الْغِيْبَةُ ؟» قَالُوا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: «ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَــكْرَهُ»،قِيْلَ:أَفَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ فِيْ أَخِي مَا أَقُوْلُ؟ قَالَ: «إِنْ كَانَ فِيْهِ مَا تَقُوْلُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ، وإِنْ لَم يَــكُنْ فِيْهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ». {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 2589}

४१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम जानते हो गीबत क्या है? सहाब-ए-किराम ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अपने भाई का जिक्र इस तरह करो जिसको वह नापसन्द करे। पूछा गया आप का क्या ख्याल है अगर उसके अन्दर वह बातें पायीं जायें जो मैं ने कही हैं? फरमायाः जो बातें तुम ने कही हैं, अगर उसमें पायी जायें तो यहो गीबत है और अगर न पायी जायें तो वास्तव में तुम ने उस पर झूठा आरोप लगाया। (मुस्लिम २५८९)

42- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«سَبَقَ الْمُفَرِّدُوْنَ» قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُوْنَ،يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَــالَ:«اَلذَّاكِرُوْنَ اللهَ كَثِيْرًا،وَالذَّاكِرَاتُ»{رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 2676}

४२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुफर्रिदून आगे बढ़ गये। लोगों ने पूछा मुफरिदून कौन ह? फरमायाः अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और औरत। (मुस्लिम २६७६)

43– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَ أَمْوَلِكُم ، وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ» {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2564}

४३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी शक्ल व सूरत और माल की तरफ नहीं देखता है बल्कि वह तुम्हारे दिलों और आमाल को देखता है। (मुस्लिम २५६४)

44– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَجْعَلُوا بُيُوْتَكُمْ مَقَابِرَ، إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْفِرُ مِنَ الْبَيْتِ الَّذِي تُقْرَأُ فِيْهِ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ» {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 780}

४४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरह बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम ७८०)

45- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُـــوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْــجَنَّةَ مَنْ لَا يَأمَنُ جَارُهُ بَوائِقَهُ». {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 46}

४५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम ४६)

46- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُـــوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَقْرَبُ مَا يَكُونُ العَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ ؛ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ» {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 482}

४६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से बहुत करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम ४८२)

47- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُـــوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَلْتَمِسُ فِيْهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللهُ لَهُ بِهِ طَرِيْقًا إِلَى الجَنَّةِ» {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 2699}

४७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम २६९९)

48- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُــوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللهَ يَقُوْلُ يَوْمَ القِيَامَةِ: أَيْنَ الْمُتَحَابُّوْنَ بِجَلَالِي ، اَلْيَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي ،يَوْمَ لَاظِلَّ إِلَّا ظِلِّي» {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 2566}

४८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहेगा मेरो अजमत व जलाल के लिए मुहब्बत करने वाले कहां हैं, आज के दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, इस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम २५६६)

49- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُــوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلَاةُ ، فَلا صَلَاةَ إِلَّا المكْتُوْبَة ». {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 710}

४६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम ७१०)

50- عَنْ أَبِي هُـــرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُــوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ ، وَجَنَةُ الكَافِرِ». {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 2956}

५०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

दुनिया मोमिन के लिये कैद खाना है और काफिर के लिये जन्नत है। (मुस्लिम २९५६)

51– عَنْ عَــائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ». {مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 2697، 1718}

५१. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो इसमें से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी २६९७-मुस्लिम १७१८)

52– عَنْ عَــائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَـــالَ: «أَحَبُّ الأَعْمَالِ إِلَى اللهِ تَعَالَى أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَـــلَّ» . {مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 783، 6464}.

५२. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम ही क्युं हों। (बुखारी ७८३-मुस्लिम ६४६४)

53– عَنْ عَــائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيْعَ اللهَ فَلْيُطِعْهُ ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلَا يَعْصِهِ». {رَوَاهُ الْـــبُـــخَارِيُّ 6696}

५३. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती है आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो

चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़्र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी ६६९६)

54– عَنْ عَــائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّــبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَسُبُّوا الأَمْوَاتَ ؛ فَإِنَّهُمْ قَدْ أَفْضَوْا إِلَى مَا قَدَّمُوا» . {رَوَاهُ الْــبُـــخَارِيُّ 1393}

५४. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती है आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-१३९३)

55– عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَت: «كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدَعُ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الغَدَاةِ» {رَوَاهُ الْــبُـــخَارِيُّ 1182}

५५. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी ११८२)

56– عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَت: «كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ التَّيَمُّنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ ، فِي طُهُورِهِ وَتَرَجُّلِهِ وَتَنَعُّلِهِ». {رَوَاهُ الْــبُـــخَارِيُّ 426}

५६. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तमाम कामों में दायें साइड को पसन्द करते थे पाकी हासिल करने में कंघी करने में और जूता पहनने में (बुखारी ४२६)

57– عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَت: «كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَذْكُرُ اللهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ» {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 373}

५७. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह को हर वक़्त याद करते थे। (मुस्लिम ३७३)

58– عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «رَكْعَتَا الفَجْرِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا» {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 725}

५८. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु वसल्लम से बयान करती हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फज्र की दो रकअ़तें दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से बेहतर है। (मुस्लिम ७२५)

59– عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الرِّفْقَ لَا يَكُوْنُ فِي شَيْءٍ إِلَّا زَانَهُ ، وَلَا يُنْزَعُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا شَانَهُ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2594}

५९. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः बेशक जिस चीज़ में नर्मी पायी जाये तो वह उस को अच्छा बना

देती है और जिस चीज़ से नर्मी निकल जाये तो वह चीज़ ऐबदार हो जाती है। (मुस्लिम २५९४)

60- عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُم حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ». {مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 13، 45}

६०. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (बुखारी १३-मुस्लिम ४५)

61- عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسًا ، أَو يَزْرَعُ زَرْعًا ، فَيَأْكُلُ مِنْهُ طَيْرٌ ، أَو إِنْسَانٌ ، أَو بَهِيْمَةٌ ، إِلَّا كَانَ لَــهُ بِهِ صَدَقَةٌ» {مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 2320، 1553}

६१. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः कोई मुसलमान पौदा लगाता है या खेती करता है और उससे पक्षी और इन्सान और जानवर खाते हैं तो यह उसके लिये सदक़ा है। (बुखारी,२३२० मुस्लिम १५५३)

62- عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ، وَيُنْسأُ لَهُ فِي أَثَــرِهِ ، فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ». {مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 5986، 2557}

६२. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः जो शख्स यह चाहता हो कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी कर दी जाये और उसकी उमर में इजाफा हो तो उसे चाहिये कि अपने रिश्ते नाते को जोड़े रखे। (बुखारी ५९८६-मुस्लिम २५५७)

63– عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَكْثرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اَللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً ، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 6389، 2690}

६३. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते थेः अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतौं व फिल आखिरति हसनतौं व क़िना अजाबन्नार, ऐ अल्लाह हम को दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और जहन्नम की आग से बचा ले। (बुखारी, ६३८९ मुस्लिम २६९०)

64– عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّما الصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الأُوْلَى» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 1283، 926}

६४. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक सब्र पहले दुख के वक्त है। (बुखारी,१२८३ मुस्लिम ९२६)

65– عن أنسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أنه قال: «يَتْبَعُ المَيِّتَ ثَلَاثَةٌ فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقَى مَعَهُ وَاحِدٌ ، يَتْبَعُهُ أَهْلُهُ ، وَمَالُهُ ، وَعَمَلُهُ، فَيَرْجِعُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ ، وَيَبْقَى عَمَلُهُ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 6514، 2960}

६५. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी ६५१४-मुस्लिम २९६०)

66– عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا، وَ بَشِّرُوا وَلَا تُنَفِّرُوا». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 69، 1733}

६६. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, ६९ मुस्लिम १७३३)

67– عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «سَوُّوا صُفُوفَكُم ؛ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ مِنْ إِقَامَةِ الصَّلَاةِ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 723، 433}

६७. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी,७२३ मुस्लिम ४३३)

68– عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:«إِنَّ اللهَ لَيَرضَى عَنِ الْعَبْدِ أَنْ يَأْكُلَ الأَكْلَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا،أَوْ يَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا»{رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2734}

६८. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः बेशक अल्लाह बन्दे से खुश रहता है क्योंकि वह खाता है तो उस पर अल्लाह की हम्द बयान करता है और पानी पीता है तो उस पर भी अल्लाह की हम्द बयान करता है। (मुस्लिम २७३४)

69– عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُم حَتَّى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهِ ، وَوَلَدِهِ ، وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 15، 44}

६९. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः तुम में से कोई उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके बाप से उसकी औलाद से और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। (बुखारी,१५ मुस्लिम ४४)

70– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «مَا زَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 6015، 2625}

७०. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक कि मुझे यह यकीन होने लगा कि वह उसको वारिस बना देंगे। (बुखारी ६०१५-मुस्लिम २६२५)

71- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «اِجْعَلُوْا آخِرَ صَلَاتِكُم بِاللَّيْلِ وِتْرًا». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 998، 751}

७१. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी ६६८-मुस्लिम ७५१)

72- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «مَا زَالَ الرَّجُلُ يَسْأَلُ النَّاسَ حَتَّى يَأْتِيَ يَوْمَ القِيَامَةِ لَيْسَ فِي وَجْهِهِ مُزْعَةُ لَحْمٍ» {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 1474، 1040}

७२. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आयगा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी,१४७४ मुस्लिम १०४०)

73- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «اَلَّذِي تَفُوْتُهُ صَلَاةُ العَصْرِ، فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلُهُ وَمَالُهُ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 552، 626}

७३. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि उसका माल और औलाद सब बर्बाद होगए। (बुखारी ५५२-मुस्लिम ६२६)

74- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اَلْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ ، لا يَظْلِمُهُ ولا يُسْلِمُهُ، مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيْهِ ، كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ ، وَمَنْ فَرَّجَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرُبَاتِ يَوْمِ القِيَامَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللهُ يَوْمَ القِيَامَةِ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 2442، 2580}

७४. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान मुसलमान का भाई है न वह जुल्म करता है और न उसको दुख पहुंचाता है, जो अपने भाई की जरूरत का ख्याल रखता है अल्लाह उसकी जरूरत पूरी करता है और जिसने किसी मुसलमान की किसी परेशानी को दूर कर दिया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसकी परेशानी को दूर कर देगा और जिसने किसी मुसलमान के ऐब को छुपाया अल्लाह तआला क्यामत क दिन उसके ऐब को छपायेगा। (बुखारी,२४४२ मुस्लिम २५८०)

75- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ أَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْكِبِيْ، فَقَالَ: «كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيْبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيْلٍ». {رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ 6416}

७५. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे कन्धे को पकड़ा और कहा तुम इस दुनिया में मुसाफिर या रास्ता पार करने वाले की तरह रहो। (बुखारी ६४१६)

76– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «اَلظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ يَّوْمَ القِيَّامَةِ». {رَوَاهُ الْـبُـخَارِيُّ 2447}

७६. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुल्म क्यामत के दिन अंधेरे का सबब बनेगा। (बुखारी २४४७)

77– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِن لِّسَانِهِ وَيَدِهِ ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ» {رَوَاهُ الْـبُـخَارِيُّ 6484}

७७. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान वह है जिसके हाथ और जुबान से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें और मुहाजिर वह है जो अल्लाह की मना की हुयी चीजों को छोड़ दे। (बुखारी ६४८४)

78– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ، وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ ». {رَوَاهُ مُـسْلِـمٌ 2003}

७८. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर नशाआवर चीज़ शराब है और हर नशाआवर चीज़ हराम है। (मुस्लिम २००३)

79– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «أَبَــرُّ الْبِرِّ أَنْ يَصِلَ الرَّجُلُ وُدَّ أَبِيْهِ». {رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ 2552}

७९. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नेकियों में सबसे बड़ी नेकी यह है कि कोई आदमी अपने बाप से मुहब्बत रखने वालों से मुहब्बत रखे। (मुस्लिम २५५२)

80– عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا حَسَدَ إِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَــاهُ اللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَتْلُوهُ آنَــاءَ اللَّيْلِ وَآناءَ النَّهَارِ ، وَرَجُلٌ آتاهُ اللهُ مَالًا فَهُوَ يُنْفِقُهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ». {مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 7529، 815}

८०. सालिम अपने बाप रजिअल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद केवल दो चीज़ों में है एक आदमी वह है जिसको अल्लाह ने कुरआन की तालीम दी तो वह उसकी रात और दिन में तिलावत करता है और एक आदमी वह है जिस को अल्लाह ने माल दिया तो वह उस माल को रात और दिन में खर्च करता है। (बुखारी,७५२९ मुस्लिम ८१५)

81– عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «لَا تَأْكُلُوا بِالشِّمَالِ ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَأْكُلُ بِالشِّمَالِ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2019}

८१. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बायें से न खाओ क्योंकि बायें से शैतान खाता है। (मुस्लिम २०१६)

82– عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «مَنْ لَقِيَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ ، وَمَنْ لَقِيَهُ يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 93}

८२. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसके साथ किसी को साझेदार नहीं बनाया होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसने उसके साथ किसी को साझीदार बनाया होगा तो जहन्नम में दाखिल होगा। (मुस्लिम ६३)

83– عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 82}

८३. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक आदमी शिर्क और कुफ्र के बीच का फर्क़ नमाज़ का छोड़ना है। (मुस्लिम ८२)

84- عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «يُبْعَثُ كُلُّ عَبْدٍ عَلَى مَا مَاتَ عَلَيْهِ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2878}

८४. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः हर बन्दा अपने कर्म के अनुसार उठाया जायेगा। (मुस्लिम २८७८)

85- عَنْ بَعْضِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُنَّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَتَى عَرَّافًا فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ لَم تُقْبَلْ لَهُ صَلَاةٌ أَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2230}

८५. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाज़ बीवियां बयान करती हैं आपने फरमायाः जो किसी अर्राफ (भविश्य या गैब की बातें बताने वाले) के पास गया और उसने किसी चीज़ के बारे में पूछा तो उसकी चालीस रातों की नमाज़ कुबूल नहीं होगी। (मुस्लिम २२३०)

86- عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «إِنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا عِنْدَ اللهِ يَوْمَ القِيَامَةِ الْمُصَوِّرُوْنَ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 5950، 2109}

८६. इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वाले को दिया जायेगा। (बुखारी,५९५० मुस्लिम २१०९)

87- عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «مَنْ قَرَأَ بِالآيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُوْرَةِ البَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ» {رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ 5009}

८७. इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जिस ने रात में सूरह बक्रा की आखिरी दो आयतें पढ़ीं यह उसके लिये काफी हो जायेंगी। (बुखारी ५००६)

88- عَنْ ثَابِتِ بنِ الضحَّاكِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : «لَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 6105، 110}

८८. साबित बिन जहहाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः मोमिन पर लानत करना उसका कत्ल करने के समान है। (बुखारी,६१०५ मुस्लिम ११०)

89- عَنْ أَبِي ذَرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوْفِ شَيْئًا ، وَلَوْ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلِقٍ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2626}

८९. अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः छोटी सी भलाई को हक़ीर (मामूली) न समझो और अगर अपने भाई से मिलो तो उससे हंसते हुये मिलो। (मुस्लिम २६२६)

90- عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَدْعُو لِأَخِيْهِ بِظَهْرِ الغَيْبِ، إِلَّا قَالَ المَلَكُ: وَلَكَ بِمِثْلٍ» {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 2732}

९०. अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भी मुस्लिम बन्दा अपने किसी भाई की उसकी गैरमौजूदगी में उसके लिये दुआ करता है तो फरिश्ता कहता है तुम्हारे लिये ऐसी ही दुआ हो। (मुस्लिम २७३२)

91- عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ». {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 71، 1037}

९१. मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसके साथ अल्लाह भलाई करने का इरादा करता है तो उसको दीन की समझ दे देता है। (बुखारी,७१ मुस्लिम १०३७)

92- عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الخُدْرِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «إِذَا سَمِعْتُمُ النِّدَاءَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ الْمُؤَذِّنُ » {مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ 611، 383}

९२. अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनो तो वैसे ही कहो जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है। (बुखारी,६११ मुस्लिम ३८३)

93– عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْـمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجلِسَ». {مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ 444، 714}

६३. अबू कतादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े। (बुखारी,४४४ मुस्लिम ७१४)

94– عَنْ أَبِي مُوْسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْـحَيِّ وَالْـمَيِّتِ». {رَوَاهُ الْـبُـخَارِيُّ 6407}

६४. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अपने रब का जिक्र करता है और जो जिक्र नहीं करता है उनकी मिसाल जिन्दे और मुर्दे की तरह है। (बुखारी ६४०७)

95– عن ابن عباس رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيْهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ : الصِّحَّةُ وَالفَرَاغُ» {رَوَاهُ الْـبُـخَارِيُّ 6412}

६५. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो नेअमतों में अधिकतर लोग धोके में रहते हैं तनदुरूस्ती और खाली वक्त म (बुखारी ६४१२)

96– عَنْ عُثْمَانَ بنِ عفَّانٍ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ قَالَ: قَالَ النِّبيُّ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ: «خَيْرُكُم مَنْ تَعَلَّمَ القُرْآنَ وَعَلَّمَهُ» {رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ 5027}

९६. उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में सब से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और उसको सिखाये। (बुखारी,५०२७)

97– عَنْ عُثْمَانَ بنِ عفَّانٍ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ قَالَ:قَالَ النَّبِيُّ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ:«مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الوُضُوْءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ،حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِهِ»{رَوَاهُ مُسْلِمٌ 245}

९७. उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अच्छी तरह वज् किया तो उसके शरीर से गुनाह निकल जाते हैं यहां तक कि उसके नाखुन से भी निकल जाते हैं। (मुस्लिम २४५)

98– عَنْ عُثْمَانَ بنِ عفَّانٍ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ : «مَنْ صَلَّى العِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ ، وَمَنْ صَلَّى الصُبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ اللَّيْلَ كُلَّهُ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 656}

९८. उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी तो गोया कि

उसने आधी रात तक नमाज़ पढ़ी और जिसने सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी तो गोया कि उसने पूरी रात नमाज़ पढ़ी। (मुस्लिम ६५६)

99- عَنْ أَبِي أَيُّـوبَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : «مَنْ صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ أَتْبَعَهُ سِتًّا مِّنْ شَوَّالٍ ، كَانَ كَصِيَامِ الدَّهْرِ». {رَوَاهُ مُسْلِمٌ 1164}

९९. अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने रमज़ान के रोज़े रखे और फिर शव्वाल के छः रोज़े रखे तो उसका रोज़ा पूरे जमाने के रोज़े की तरह हो गया। (मुस्लिम ११६४)

100- عَنْ سَهْلِ بنِ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ«مَنْ سَأَلَ اللهَ الشَّهَادَةَ بِصِدْقٍ،بَلَّغهُ اللهُ مَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ،وَإِنْ مَاتَ عَلَى فِرَاشِهِ»{رَوَاهُ مُسْلِمٌ 1909}

१००. सहल बिन हनफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अल्लाह से सच्चे दिल से शहादत तलब की अल्लाह उसको शहीदों के दर्जे तक पहुंचा देगा अगर्चे उस की मौत बिस्तर पर हो। (मुस्लिम १९०९)

101– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَحْسَنَ أَحَدُكُمْ إِسْلَامَهُ ، فَكُلُّ حَسَنَةٍ يَعْمَلُهَا تُكْتَبُ لَهُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِ مِئَةِ ضِعْفٍ ، وَكُلُّ سَيِّـئَـةٍ يَعْمَلُهَا تُكْتَبُ لَهُ بِمِثْلِهَا» [مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ:42، 129]

१०१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई अपने इस्लाम को बेहतर बना ले तो हर नेकी जो वह करता है उसके बदले में उसके लिये दस से सात सौ गुना तक लिख दिया जाता है और हर बुराई जिसको वह करता है तो उसके बराबर लिख दिया जाता है। (बुखारी४२, मुस्लिम१२९)

102– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ فَيَقُولُ: مَنْ خَلَقَ كَذَا ؟ مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ حَتَّى يَقُولَ: مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ؟ فَإِذَا بَلَغَهُ ، فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّـهِ وَلْيَنْتَهِ» [مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ: 3276، 134]

१०२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से किसी के पास शैतान आता है फिर कहता है कि फुलां चीज़ को किस ने पैदा किया? फुलां चीज़ को किसने पैदा किया यहां तक कि शैतान कहता है कि तुम्हारे रब को किसने पैदा किया? जब वह किसी को इस तरह के वसवसा में डाले तो उसे अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिये और शैतानी ख्याल को छोड़ देना चाहिय। (बुखारीः३२७६, मुस्लिमः१३४)

103– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَحَبَّ اللَّـــهُ الْعَبْدَ ، نَادَى جِبْرِيلَ: إِنَّ اللَّـــهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحْبِبْهُ ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ ، فَيُنَادِي جِبْرِيلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ اللَّـــهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّوهُ ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ ، ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الْأَرْضِ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 3209، 2637]

१०३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल से कहता है बेशक अल्लाह फ़्लां से मुहब्बत करता है इसलिये तुम भी उससे मुहब्बत करो फिर जिब्रईल भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर जिब्रईल आसमान वालों को पुकारने लगते हैं कि अल्लाह तआला फ़ुलां शख्स से मुहब्बत करता है इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत करो, पुकार लगाने के बाद पूरे आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं इसके बाद पूरी धरती वाले उसको मक़्बूल समझते हैं। (बुखारीः ३२०६, मुस्लिमः २६३७)

104– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَقْبَلُ اللَّـــهُ صَلَاةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6954، 225]

१०४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला तुम में से किसी ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल

नहीं करता जिसे वुज़ू की ज़रूरत हो यहां तक कि वह वुज़ू कर ले। (बुखारी,६९५४, मुस्लिम २२५)

105– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْـرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ ، هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ ؟» قَالُوا: لَا يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ، قَالَ: «فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْـخَمْسِ ، يَمْحُو اللهُ بِهِنَّ الْـخَطَايَا» [مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ: 528 ، 667 ، واللّفظُ لِمُـسْلِـمٍ]

१०५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भला बताओ अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल बाक़ी रहेगा? लोगों ने कहाः उसके शरीर पर थोड़ी सी भी मैल बाकी नहीं रहेगी। तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया यही मिसाल पांचों नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इन नमाज़ों के बदले गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी ५२८, मुस्लिम ६६७, शब्द मुस्लिम के हैं)

106– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ الْغِنَى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ، وَلَكِنَّ الْغِنَى غِنَى النَّفْسِ» [مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ: 6446، 1051]

१०६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

माल व इज़्ज़त मालदारी नहीं है असल माल दारी नफ्स की मालदारी है। (बुखारी ६४४६ मुस्लिम १०५१)

107– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ ؟ فَقَالَ: «إِيمَانٌ بِاللَّـــهِ وَرَسُولِهِ» قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا ؟ قَالَ: «اَلْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّـــهِ» قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا ؟ قَالَ: «حَجٌّ مَبْرُورٌ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 26، 83]

१०७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गयाः कौन सा अमल सबसे अफज़ल है? तो आप ने फरमायाः अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान। पूछा गयाः फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद। पूछा गया फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमायाः हज्जे मबरूर (बुखारी २६, मुस्लिम ८३)

108– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْـــيَـــــوْمِ الآخِرِ فَلَا يُؤْذِ جَارَهُ ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُـــــكْرِمْ ضَيْفَهُ ، وَمَنْ كَـــانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْـــيَـــوْمِ الآخِـــرِ فَلْيَـــــقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6136، 47]

१०८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे और जो अल्लाह और

आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अपने मेहमान का सम्मान करना चाहिये और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अच्छी बात कहनी चाहिये या खामोश रहना चाहिये। (बुखारी ६१३६, मुस्लिम ४७)

109– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرِ، يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ، مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ، مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1145، 758]

१०६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हमारा रब आसमाने दुनिया पर हर रात को उस वक़्त उतरता है जब रात की आखिरी तिहाई बाकी रहती है कहता है जो मुझे पुकारेगा तो उसकी दआ कुबूल करूंगा जो मुझसे मांगेगा तो मैं उसको दूंगा जो मुझसे मआफी तलब करेगा तो मैं उसको मआफ कर दूगा। (बुखारी, ११४५, मुस्लिम ७५८)

110– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قَالَ اللهُ تَعَالَى: يُؤْذِينِي ابنُ آدَمَ ، يَسُبُّ الدَّهْرَ، وَأَنَا الدَّهْرُ، بِيَدِي الْأَمْرُ، أُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 7491، 2246]

११०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ने कहाः आदम की औलाद मुझे दुख

पहुंचाती है वह जमाने को गाली देती है और जमाना मैं ही हूं मामले मेरे हाथ में है मैं ही रात और दिन को बदलता हूं। (बुखारी ७४६१, मुस्लिम २२४६)

111– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّـــهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي مَا حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسَهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَتَـــكَلَّمْ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 5269، 127]

१११. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला मेरी उम्मत की तरफ से होने वाले उन गलत इरादों को मआफ कर देता है जब तक कि उसको कर न दे या उसको कह न दे। (बुखरी ५२६९-मुस्लिम१२७)

112– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ فَتَعَجَّلَ كُلُّ نَبِيٍّ دَعْوَتَهُ وَإِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لِأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَهِيَ نَائِلَةٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لاَ يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6304، 199]

११२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर नबी के लिये कुबूल करने वाली एक दुआ होती है जिसके जरिये वह दुआ करता है और मैं चाहता हूं कि इस दुआ को आखिरत में अपनी उम्मत की शिफाअत के लिये खास कर दूं इन्शा अल्लाह मेरी यह दुआ मेरे हर उस उम्मती के हक मे होगी

जिसकी मात इस हालत में हुई हो कि वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया हो। (बुखारी-६३०४ मुस्लिम १६६)

113- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَقِيمُوا الصَّفَّ فِي الصَّلَاةِ ، فَإِنَّ إِقَامَةَ الصَّفِّ مِنْ حُسْنِ الصَّلَاةِ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 722 ، 435]

११३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नमाज़ में सफों को बराबर रखो क्यों कि नमाज़ का हुस्न सफों को बराबर रखने में है। (बुखारी ७२२ मुस्लिम ४३५)

114- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فِي يَوْمِ الْـــجُمُعَةِ سَاعَةٌ لَا يُوَافِقُهَا مُـــسْلِـــمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي ، يَسْأَلُ اللَّـــهَ خَيْراً إِلَّا أَعْطَاهُ». وَقَالَ بِيَدِهِ ، قُلْنَا يُقَلِّلُهَا يُزَهِّدُها. [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6400، 852]

११४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी होती है जिसमें कोई मुसलमान खड़े हो कर दुआ करता है तो वह घड़ी उसके लिये अच्छी होती है। अल्लाह से भलाई मांगता है तो अल्लाह तआला उसको दे देता है। और अपने हाथ के इशारे से कहा। हमने कहा कि इस घड़ी को आप बहुत कम या मामूली बता रहे थे। (बुखारी ६४०० मुस्लिम ८५२)

115– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللَّـهَ مِنْ فَضْلِهِ ؛ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا ، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الْحِمَارِ ، فَتَعَوَّذُوا بِاللَّـهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ؛ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 3303، 2729]

११५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब मुर्ग की बांग (आवाज़) सुनो तो अल्लाह से उसके फज़्ल का सवाल करो क्योंकि उसने फरिश्ते को देखा है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैतान को देखा है। (बुखारी ३३०३, मुस्लिम २७२९)

116– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَوْصَانِي خَلِيلِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِثَلَاثٍ: صِيَامِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ، وَرَكْعَتَيْ الضُّحَى ، وَأَنْ أُوتِرَ قَبْلَ أَنْ أَنَامَ . [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1981، 721]

११६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मेरे खलील सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन चीजों वसिय्यत की थी, हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखने की वसिय्यत की थी, और चाश्त की दो रकअत पढ़ने की वसिय्यत की थी और सोने से पहले वित्र पढ़ लेने की भी वसिय्यत की थी। (बुखारी, १९८१ मुस्लिम ७२१)

117– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَعْظَمُ أَجْرًا ؟ قَالَ: «أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيحٌ شَحِيحٌ

تَخْشَى الْفَقْرَ وَتَأْمُلُ الْغِنٰى، وَلَا تُمْهِلُ حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الْـحُلْقُومَ قُلْتَ: لِفُلَانٍ كَذَا ، وَلِفُلَانٍ كَذَا ، وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1419، 1032]

११७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल किस तरह के सदके में ज़्यादा सवाब है? आपने फरमायाः जिसे तुम सेहत के साथ बुख्ल के बावजूद करो तुम्हें एक तरफ फकीरी का डर हो और दूसरी तरफ मालदार बनने की तमन्ना और उस सदका खैरात में ढील नहीं होनी चाहिये यहां तक कि जब जान हलक तक आ जाये तो उस वक़्त तू कहने लगो कि फुलां के लिये इतना और फुलां के लिए इतना हालांकि अब तो वह फुलां का हो चुका है। (बुखारी १४१९, मुस्लिम १०३२)

118– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَسْرِعُوا بِالْجِنَازَةِ ، فَإِنْ تَكُ صَالِحَةً فَخَيْرٌ تُقَدِّمُونَهَا إِلَيْهِ ، وَإِنْ تَكُ سِوٰى ذَلِكَ فَشَرٌّ تَضَعُونَهُ عَنْ رِقَابِكُمْ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1315 ، 944]

११८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम जनाज़ा को तेज़ी से लेकर चलो क्योंकि अगर वह नेक है तो तुम उसको भलाई की तरफ नजदीक कर रहे हो और अगर इसके सिवा है तो एक बुराई है जिसे तुम अपनी गर्दनों से उतार रहे हो। (बुखारी १३१५, मुस्लिम ६४४)

119– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُــسْلِــمٍ أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا يَغْسِلُ فِيهِ رَأْسَهُ وَجَسَدَهُ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: **897** ، **849**]

११९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर मुसलमान पर हक् है कि हर सात दिन में एक दिन नहाये, उस दिन अपने सर को और जिस्म को गुस्ल दे। (बुखारी ८९७ मुस्लिम ८४९)

120– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اَلحَلِفُ مُنَفِّقَةٌ لِلسِّلْعَةِ مُمْحِقَةٌ لِلْبَرَكَةِ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: **2087** ، **1606**]

१२०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः झुठी कसम खाने से सामान बिक जाती है लेकिन बरकत को मिटा देती है। (बुखारी २०८७, मुस्लिम १६०६)

121– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كُلُّ أُمَّتِي مُعَافًى إِلَّا الْــمُجَاهِرِينَ ، وَإِنَّ مِنَ الْــمُجَاهَرَةِ أَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ بِاللَّيْلِ عَمَلًا، ثُمَّ يُصْبِحُ وَقَدْ سَتَرَهُ اللَّــهُ عَلَيْهِ ، فَيَقُولُ: يَا فُلَانُ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا ، وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ ، وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللَّــهِ عَنْهُ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: **6069**، **2990**]

१२१. अबू हरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जायेगा लेकिन खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वालों को मआफ नहीं किया जायेगा और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल है कि एक शख्स रात को कोई (गुनाह) का काम करे और अल्लाह ने उसके गुनाह को छुपा लिया है मगर सुबह होने पर वह कहने लगे कि ऐ फुलां मैंने कल रात फुलां फुलां काम किया था, रात गुज़र गयी थी, उसके रब ने उसके गुनाह को छुपाये रखा और जब सुबह हुयी तो उसने खुद ही अल्लाह के पर्दे को खोल दिया। (बुखारी ६०६९, मुस्लिम २९९)

122– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ ، فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ ، وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِينُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 3277، 1079]

१२२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान जंजीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (बुखारी ३२७७ मुस्लिम १०७९)

123– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا نَسِيَ فَأَكَلَ وَشَرِبَ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ ؛ فَإِنَّما أَطْعَمَهُ اللَّهُ وَسَقَاهُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1933، 1155]

१२३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भूल कर खा पी ले तो उसे चाहिये कि अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया पिलाया है। (बुखारी १९३३, मुस्लिम ११५५)

124– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ حَجَّ هَذَا الْبَيْتَ، فَلَمْ يَرْفُثْ ، وَلَمْ يَفْسُقْ، رَجَعَ كَمَا وَلَدَتْهُ أُمُّهُ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 1819، 1350]

१२४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इस घर (काबा) का हज्ज किया और उसमें न शहवत की बात की और न कोई गुनाह का काम किया तो वह उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उस की मां ने उसे जना था। (बुखारी १८१९, मुस्लिम १३५०)

125– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «تُنْكَحُ الْـــمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ: لِـــمَالِـــهَا ، وَلِـــحَسَبِهَا وَلِجَمَالِهَا، وَلِدِينِهَا، فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّينِ تَرِبَتْ يَدَاكَ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 5090، 1466]

१२५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः चार चीजों की बुनियाद पर औरत से शादी की जाती है उसके माल की वजह से उसके हसब नसब की वजह से और उसके खुबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से और तुम दीनदार

औरत से शादी करके कामयाबी हासिल करो, नहीं तो तुम्हारे हाथों में मिटटी लगेगी। (बुखारी ५०६० मुस्लिम १४६६)

126- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْـــجَنَّةِ، وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 1196، 1391]

१२६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न फरमायाः मेरे घर और मेरे मिम्बर के बीच की जमीन जन्नत के बागो में से एक बाग है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ के ऊपर होगा। (बुखारी ११९६, मुस्लिम १३९१)

127- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْـــمَاشِي ، وَالْـــمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ:6232،2160] وعندَ الْـــبُـــخَارِيِّ: «الصَّغِيرُ عَلَى الْكَبِيرِ» [6231]

१२७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सवार पैदल चलने वाले से सलाम करेगा, पैदल चलने वाला बैठने वाले से और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों पर सलाम करेंगे। (बुखारी २१६० मुस्लिम ६२३२)

और बुखारी में “छोटा बड़े पर” का शब्द भी है। (बुखारी ६२३१)

128- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 5997، 2318]

१२८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो दया नहीं करता है उस पर दया नहीं की जाती है। (बुखारी ५९९७ मुस्लिम २३१८)

129- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ وَجَدَ غُصْنَ شَوْكٍ عَلَى الطَّرِيقِ فَأَخَّرَهُ فَشَكَرَ اللَّـهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 654، 1914]

१२९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई आदमी चलते चलते राह में कांटे की कोई टेहनी पाकर उसको हटा देता है तो इस पर अल्लाह उसके इस अमल की कदर करता है और उसकी मग्फिरत कर देता है। (बुखारी ६५४ मुस्लिम १९१४)

130- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يُسْتَجَابُ لِأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ يَقُولُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 6340، 2735]

१३०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दे की दुआ कुबूल होती है जब तक कि वह जल्दी न करे

कि कहने लगे कि मैंने दुआ की थी और मेरी दुआ कुबूल नहीं हुयी। (बुखारी ६३४, मुस्लिम २७३५)

131– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ: يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 7115، 157]

१३१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत उस वक्त आयेगी जब एक आदमी दूसरे आदमी की कब्र से गुजरेगा तो वह कहेगा काश मैं उसकी जगह होता। (बुखारीः ७११५ मुस्लिम १५७)

132– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَقُلْ أَحَدُكُمْ: اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ ، اِرْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ ، اُرْزُقْنِي إِنْ شِئْتَ ، وَلْيَعْزِمْ مَسْأَلَتَهُ ، إِنَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ، لَا مُكْرِهَ لَـهُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 7477، 2679]

१३२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई इस तरह दुआ न करे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मेरी मगफिरत फरमा दे, अगर तू चाहे तो मुझ पर दया कर अगर तू चाहे तो मुझे रोज़ी दे बल्कि मजबूत इरादे से माँगनी चाहिये क्योंकि अल्लाह जो चाहता है करता है कोई उस पर जबरदस्ती करने वाला नहीं (बुखारी ७४७७ मुस्लिम २६७६)

133– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَتَمَنَّى أَحَدُكُمْ الْـــمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ يَزْدَادُ وَإِمَّا مُسِيْـــــئًا فَلَعَلَّهُ يَسْتَعْتِبُ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 7235، 2682]

१३३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई शख्स मौत की तमन्ना न करे अगर वह नेक है तो संभव है कि और ज्यादा नेकी करे और अगर बुरा है तो शायद अपनी बुराईयों से तौबा करले। (बुखारी ७२३५ मुस्लिम २६८२)

134– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: اَلْـــحَمْدُ لِلَّـــهِ ، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوهُ أَوْ صَاحِبُهُ : يَرْحَمُكَ اللهُ، فَإِذَا قَالَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ ، فَلْيَقُلْ: يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6224، 2992]

१३४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई छींके तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे और उसका भाई या साथी यरहमुकल्लाह कहे जब उसका साथी यरहमुकल्लाह कह दे तो छींकने वाला इसके जवाब में यहदीकुमुल्लाह व युसलिह बालकुम कहे। (बुखारी ६२२४ मुस्लिम २९९२)

135– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «سَتَـــكُونُ فِتَنٌ، اَلْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ ، وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي،

وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي ، مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ ، فَمَنْ وَجَدَ فِيهَا مَلْجَأً أَوْ مَعَاذًا فَلْيَعُذْ بِهِ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 7081، 2886]

१३५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः निकट ही ऐसे फितने पैदा होंगे जिनमें बैठने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा और खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। जो दूर से उनकी तरफ झांक कर भी देखेगा तो वह उनको भी समेट लेंगे। उस वक्त जिस किसी को कोई पनाह मिल जाये या बचाव की जगह मिल जाये तो वह उसमें पनाह ले ले। (बुखारी ७०८१ मुस्लिम २८८६)

136– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا الْيَهُودَ ، حَتَّى يَقُولَ الحَجَرُ وَرَاءَهُ الْيَهُودِيُّ: يَا مُــسْلِــمُ ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 2926، 2922]

وَزَادَ مُــسْلِــمٌ: «إِلَّا الْغَرْقَدَ فَإِنَّهُ مِنْ شَجَرِ الْيَهُودِ»

१३६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि यहूदियों से तुम्हारी जंग न हो जाये और पत्थर भी अपने पीछे छिपे हुये

यहूदी के बारे में कहेगा ऐ मुसलमान मेरे पीछे छिपे इस यहूदी को कत्ल कर दो। (बुखारी २६२६ मुस्लिम २६२२)

और मुस्लिम में यह शब्द ''मगर ग़रकद बेशक वह यहूद के पेड़ों में से है'' ज्यादा है।

137– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّهُ لَيَأْتِي الرَّجُلُ الْعَظِيمُ السَّمِينُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يَزِنُ عِنْدَ اللَّــهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ» وَقَالَ: اقْرَءُوا: ﴿ فَلَا نُقِيمُ لَــهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴾ [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 4729، 2785]

१३७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक क्यामत के दिन एक हटटा कटठा आदमी आयेगा लेकिन अल्लाह के यहां उसका वज़न मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं होगा और आपने फरमायाः यह कुरआनी आयत पढ़ोः ''हम क्यामत के दिन उनका कोई वजन नहीं करेंगे''। (बुखारी ४७२६ मुस्लिम २७८५)

138– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ «اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ» قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا هُنَّ قَالَ «الشِّرْكُ بِاللَّهِ وَالسِّحْرُ وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَكْلُ الرِّبَا وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 2766، 89]

१३८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सात हलाक कर देने वाली चीज़ों से बचो। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल वह सात हलाक करने वाली चीज़ें कौन सी हैं? फरमाया अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, किसी की नाहक जान लेना जिसे अल्लाह ने हराम करार दिया है, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जंग के दिन भागना और पाक दामन औरतों पर आरोप लगाना। (बुखारी २७६६, मुस्लिम ८९)

139– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَتَقَارَبُ الزَّمانُ ، وَيَنْقُصُ الْعَمَلُ، وَيُلْقَى الشُّحُّ ، وَيَكْثُرُ الهَرْجُ» قَالُوا: وَمَا الهَـرْجُ؟ «قَالَ الْقَتْلُ الْقَتْلُ» [مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ: 7061 ، 157]

१३९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाना करीब होता जायेगा और अमल कम होता जायेगा और दिलों में लालच डाल दिया जायेगा और फितने जाहिर होने लगेंगे और हर्ज की अधिकता होगी। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल हर्ज क्या है? आपने फरमायाः कत्ल कत्ल (बुखारी ७०६१, मुस्लिम १५७)

140– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ

لَاسْتَهَمُوا، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهْجِيرِ لَاسْتَبَقُوا إِلَيْهِ ، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لَأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 615 ، 437]

१४०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर लोगों को यह मालूम हो जाये कि अजान कहने और पहली सफ में नमाज़ पढ़ने में कितना सवाब मिलता है फिर उनके लिये कुरआ अन्दाज़ी के सिवा कोई चारा बाकी नहीं रहेगा तो फिर यह लोग कुरआ अन्दाज़ी ही करते और अगर लोगों को मालूम हो जाये कि नमाज़ के लिये जल्दी आने में कितना सवाब है तो इसके लिये एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते और अगर लोगों को मालूम हो जाता कि इशा और सुबह की नमाज़ पढ़ने में कितना सवाब है तो वह घुटनों के बल पर घिसटते हुये आते। (बुखारी ६१५ मुस्लिम ४३७)

141– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ ، فَلَا تَأْتُوهَا تَسْعَوْنَ ، وَأْتُوهَا تَمْشُونَ عَلَيْكُمْ السَّكِينَةُ ، فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا ، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 908 ، 902]

१४१. अबू हुररा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये तकबीर कही जाये तो दौड़ते हुये मत जाओ बल्कि पूरे सुकून के साथ जाओ नमाज़ का जो हिस्सा पाओ उसे पढ़ लो और जो रह जाये उसको पूरा करो। (बुखारी ६०८ मुस्लिम ६०२)

142– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَزَالُ قَلْبُ الْكَبِيرِ شَابًّا فِي اثْنَتَيْنِ: فِي حُبِّ الدُّنْيَا ، وَطُولِ الْأَمَلِ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 6420، 1046]

१४२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बूढ़े इन्सान का दिल दो चीज़ों के बारे में हमेशा जवान रहता है दुनिया की मुहब्बत और लम्बी जिन्दगी की आशा (बुखारी ६४२० मुस्लिम १०४६)

143– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُشِيرُ أَحَدُكُمْ عَلَى أَخِيهِ بِالسِّلَاحِ ؛ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدِهِ فَيَقَعُ فِي حُفْرَةٍ مِنْ النَّارِ» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 7072، 2617]

१४३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई अपने भाई की तरफ हथियार से इशारा न करे क्योंकि वह नहीं जानता संभव है कि शैतान उसके हाथ से छुड़वा दे और फिर वह इसकी वजह से जहन्नम के गढ़े में गिर पड़े। (बुखारी ७०७२ मुस्लिम २६१७)

144– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَأَنْ يَحْتَزِمَ أَحَدُكُمْ حُزْمَةً مِنْ حَطَبٍ فَيَحْمِلَهَا عَلَى ظَهْرِهِ فَيَبِيعَهَا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ رَجُلاً يُعْطِيهِ أَوْ يَمْنَعُهُ». [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ 2074 ، 1042]

१४४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वो शख्स जो लकड़ी का ढ़ेर अपनी पीठ पर लाद कर लाये और उसे बेचे, यह उससे बेहतर है जो किसी के सामने हाथ फैलाये चाहे वह उसे कुछ दे या न दे। (बुखारीः २०७४ मुस्लिम १०४२)

145– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِالصَّلَاةِ فَتُقَامَ، ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى مَنَازِلِ قَوْمٍ لَا يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ، فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ 2420 ، 651]

१४५. हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैंने तो यह इरादा कर लिया कि नमाज़ की जमाअत काइम करने का हुक्म देकर मैं खुद उन लोगों के घरों पर जाऊं जो जमाअत में हाज़िर नहीं होते और उनके घरों को जला दूं। (बुखारीः २४२० मुस्लिम ६५१)

146– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ صَلَاةٌ أَثْقَلَ عَلَى الْمُـــنَافِقِينَ مِنَ الْفَجْرِ وَالْعِشَاءِ ، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِيهِمَا لَأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 657، 651]

१४६.अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुनाफिकों पर इशा और फज्र की नमाज़ से ज्यादा बोझल

कोई नमाज़ नहीं है और अगर उनको मालूम हो जाये कि उन दोनों नमाज़ों में कितना सवाब है तो वह घुटनों के बल घिसटते हुये आयेंगे। (बुखारी ६५७ मुस्लिम ६५१)

147– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ يَوْمٍ يُصْبِحُ الْعِبَادُ فِيهِ ، إِلَّا مَلَكَانِ يَنْزِلَانِ فَيَقُولُ أَحَدُهُمَا: اَللَّهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا ، وَيَقُولُ الْآخَرُ: اَللَّهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا» [مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 1442، 1010]

१४७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि जब बन्दे सुबह को उठते हैं तो दो फरिश्ते आसमान से न उतरते हों तो उन दोनों में से एक कहता है ऐ अल्लाह खर्च करने वाले को उसका बदला दे और दूसरा कहता है ऐ अल्लाह बखील के माल को खत्म कर दे। (बुखारी १४४२ मुस्लिम १०१०)

148– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: مَا لِعَبْدِي الْمُؤْمِنِ عِنْدِي جَزَاءٌ إِذَا قَبَضْتُ صَفِيَّهُ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا ثُمَّ احْتَسَبَهُ إِلَّا الْجَنَّةَ» [رَوَاهُ الْــبُــخَارِيُّ: 6424]

१४८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है कि मेरे उस मोमिन बन्दे का जिस की मैं कोई कीमती चीज़ दुनिया से उठा लूं और वह इस पर

सवाब की निय्यत से सब्र कर ले तो उसका बदला मेरे यहां केवल जन्नत है। (बुखारी ६४२४)

149– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَال: «يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي المَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ، أَمِنَ الْحَلَالِ، أَمْ مِنَ الْحَرَامِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 2059]

१४६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों पर एक ऐसा जमाना आयेगा कि इन्सान यह परवाह नहीं करेगा कि उसने जो कमाया है वह हलाल से है या हराम से है। (बुखारी २०५६)

150– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «عَجِبَ اللهُ مِنْ قَوْمٍ يَدْخُلُونَ الجَنَّةَ فِي السَّلَاسِلِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 3010]

१५०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐसे लोगों पर अल्लाह को तअज्जुब (आश्चर्य) होगा जो जन्नत में दाखिल होंगे हालांकि दुनिया में अपने कुफ्र की वजह से वह बेड़ियों में थे। (बुखारी ३०१०)

151– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ ، وَلَا يَصْعَدُ إِلَى اللهِ إِلَّا الطَّيِّبُ ، فَإِنَّ اللهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يُرَبِّيْهَا لِصَاحِبِهَا كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُم فُلُوَّهُ حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 7430]

१५१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हलाल कमाई से एक खुजूर के बराबर भी खैरात की और अल्लाह तआला तक हलाल कमाई ही की खैरात पहुँचती है तो अल्लाह उसे अपने दायें हाथ से कुबूल कर लेता है और खैरात करने वाले के लिये उसे इस तरह बढ़ाता रहता है जैसे तुममें से कोइ बेछेरे को पालता पोसता है यहां तक कि वह पहाड़ के बराबर हो जाता है। (बुखारी ७४३०)

152– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قَالَ اللهُ: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ ، وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ ، وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ» [رَوَاهُ الْـبُـــخَارِيُّ: **7498**]

१५२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है कि मैंने जन्नत में अपने नेक बन्दों के लिये ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन को ना आखों ने देखा न कानों ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में उसका ख्याल गुज़रा होगा। (बुखारी ७४६८)

153– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلِمَةٌ لِأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا ؛ فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ ، مِنْ قَبْلِ

أَنْ يُؤْخَذَ لِأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِهِ ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ ، أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 6534]

१५३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अपने भाई पर जुल्म किया हो तो उसे चाहिये कि दुनिया ही में उससे मामला रफा दफा कर ले क्योंकि क्यामत के दिन न कोई दीनार होगा और ना दिरहम इससे पहले कि उसकी नेकियों को उस मजलूम को दे दिया जाये। अगर उसके पास कोई नेकी नहीं होगी तो मजलूम के गुनाहों को जुल्म करने वाले पर डाल दिया जायेगा। (बुखारी १५३४)

154– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ ، وَمَنْ يُطِعِ الأَمِيْرَ فَقَدْ أَطَاعَنِي ، وَمَنْ يَعْصِ الأَمِيْرَ فَقَدْ عَصَانِي» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ– 2957، 1835]

१५४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने मेरी अताअत की तो हकीकत में उसने अल्लाह की अताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की और जिसने अमीर की अताअत की उसने मेरी अताअत की और जिसने अमीर की नाफरमानी की तो उसने मेरी नाफरमानी की। (मुस्लिम १८३५)

155– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ ؛ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا» [مُـتَّـفَقٌ عَلَيْهِ– 6485، 3259]

१५५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर तुम लोगों को उस चीज़ के बारे में मालूम हो जाये जो मैं जानता हूं तो हसोंगे कम और रोओगे ज्यादा। (बुखारी ६४८५)

156– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا أَنْزَلَ اللهُ دَاءً ، إِلَّا أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً» [رَوَاهُ الْـبُـخَارِيُّ: 5678]

१५६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह ने हर मर्ज के साथ शिफा (एलाज) भी उतारा है। (बुखारी ५६७८)

157– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اُنْظُرُوا إِلَى مَنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ، وَلَا تَنْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ ؛ فَهُوَ أَجْدَرُ أَنْ لَا تَزْدَرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ» [رَوَاهُ مُـسْلِـمٌ: 2963]

१५७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने से कमतर की तरफ देखो और अपने से ऊपर की तरफ न देखो यह तुम्हारे लिये बेहतर है कि अल्लाह की नेमतों को मामूली न समझो। (मुस्लिम १०४१)

158– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ سَأَلَ النَّاسَ أَمْوَالَهُمْ تَكَثُّراً فَإِنَّمَا يَسْأَلُ جَمْراً، فَلْيَسْتَقِلَّ، أَوْ لِيَسْتَكْثِرْ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 1041]

१५८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोगों से आप माल बढ़ाने के लिये (भीख) मांगता है तो वह आग का अंगारा मांगता है तो चाहे वह आग के अंगारे को कम कर ले या ज्यादा कर ले। (मुस्लिम १०४१)

159– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَجْزِي وَلَدٌ وَالِدًا إِلَّا أَنْ يَجِدَهُ مَمْلُوكًا فَيَشْتَرِيَهُ فَيُعْتِقَهُ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 1510]

१५९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लड़के के लिये अपने बाप को बेहतरीन बदला यह है कि उसको गुलाम की हालत में पाये तो उसे खरीद कर आज़ाद कर दे। (मुस्लिम १५१०)

160– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَٱللَّهُعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ، وَلَنْ يُشَادَّ الدِّينَ أَحَدٌ إِلَّا غَلَبَهُ؛ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا، وَاسْتَعِينُوا بِالْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنْ الدُّلْجَةِ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 39]

१६०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक

दीन आसान है और जो शख्स दीन में सख्ती अपनाये गा तो उस पर दीन गालिब आ जायेगा। इसलिये अपने अमल में मजबूती अपनाओ और जहां संभव हो मध्यमार्ग अपनाओ और खुश हो जाओ और सुबह दोपहर शाम और किसी कद्र रात में अल्लाह से मदद हासिल करो। (बुखारी-३९)

161– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ اقْتَنَى كَلْبًا ، إِلَّا كَلْبَ مَاشِيَةٍ ، أَوْ ضَارِيًا ، أَوْ زَرْعٍ، نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطَانِ» [مُــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: **5482، 1575**]

१६१. अब्दुल्लाह बिन उमर रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने शिकारियों और मवेशियों की हिफाज़त की गर्ज़ के सिवा कुत्ता पाला तो उसके सवाब में से रोज़ाना दो कीरात की कमी हो जाती है। (बुखारी ५४८२, मुस्लिम १५७५)

162– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْلَكُمْ لَا تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ» [مُــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: **121، 66**]

१६२. अब्दुल्लाह बिन रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगो मेरे बाद फिर काफिर मत हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (बुखारी १२१ मुस्लिम ६६)

163– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ، وَلَكِنْ تَفَسَّحُوا وَتَوَسَّعُوا» **[مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 6269، 2177]**

१६३. अब्दुल्लाह बिन उमर रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई शख्स किसी दूसरे शख्स को उसके बैठने की जगह से न उठाये कि खुद वहां बैठ जाये और आने वाले को मज्लिस में जगह दे दिया करो और फराखी कर दिया करो। (बुखारी ६२६९ मुस्लिम २१७७)

164– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كُنْتُمْ ثَلاثَةً فَلاَ يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ صَاحِبِهِمَا فَإِنَّ ذَلِكَ يُحْزِنُهُ » **[مُــتَّــفَقٌ عَلَيْهِ: 6290، 2184]**

१६४. अब्दुल्लाह बिन उमर रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तीन लोग हों तो दूसरा तीसरे को छोड़ कर काना फूंसी न करे। क्योंकि इसकी वजह से उसको दुख होगा"। (बुखारी ६२९० मुस्लिम २१८४)

165– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا مَثَلُ صَاحِبِ الْقُرْآنِ كَمَثَلِ صَاحِبِ الْإِبِلِ الْمُعَقَّلَةِ ، إِنْ عَاهَدَ عَلَيْهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ أَطْلَقَهَا ذَهَبَتْ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 5031، 789]

१६५. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो अन्हमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक हाफिजे कुरआन की मिसाल रस्सी से बंधे हुये ऊंट के मालिक जैसी है अगर वह उस की देखभाल करेगा तो वह उसे रोक सकेगा और अगर छोड़ देगा तो वह भाग जायेगा। (बुखारी ५०३१ मुस्लिम ७८९)

166– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْغَادِرَ يُنْصَبُ لَهُ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ، فَيُقَالُ: هٰذِهِ غَدْرَةُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6178، 1735]

१६६. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वचन तोड़ने वाले के लिये क्यामत में एक झण्डा उठाया जायेगा और पुकारा जायेगा कि यह फुंला बिन फुंला की दगाबाज़ी का निशान है। (बुखारी ६१७८ मुस्लिम १७३५)

167– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الَّذِي تَفُوتُهُ صَلَاةُ الْعَصْرِ كَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 552 ، 626]

१६७. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि उसका घर और माल सब छीन लिया गया। (बुखारी ५५२ मुस्लिम ६२६)

168– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَايَزَالُ الْمُؤْمِنُ فِي فُسْحَةٍ مِنْ دِينِهِ مَا لَمْ يُصِبْ دَمًا حَرَامًا»[رَوَاهُ الْــبُـــخَارِيُّ: 6862]

१६८. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मोमिन उस वक्त तक अपने दीने के बारे में तंगी में नहीं रहता है जब तक नाहक खून न करे। (बुखारी ६८६२)

169– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ ، وَجَمِيعِ سَخَطِكَ» [رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ: 2739]

१६९. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह दुआ "*अल्लाहुममा इन्नी अऊजू बिक मिन जवाले निअ्मतिक व तहव्वुल आफियतिक व फुजाअति निकमतिक व जमीए सखतिक*" ऐअल्लाह मैं तेरी नेमत खतम होजाने और तेरी

आफीयत के बदल जाने और तेरी अचानक पकड से और तेरे तमाम नाराजगी से पनाह मांगता हुं (मुस्लिम २७३९)

170– عَنْ عَبْدِ اللَّـهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ خَلَعَ يَداً مِنْ طَاعَةٍ ، لَقِيَ اللهَ يَوْمَ القِيَامَةِ لَا حُجَّةَ لَهُ ، وَمَنْ مَاتَ وَلَيْسَ فِي عُنُقِهِ بَيْعَةٌ ، مَاتَ مِيْتَةً جَاهِلِيَّةً» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: **1851**]

१७०. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने फरमां बरदारी से हाथ खींच लिया (फरमांबरदारी नहीं की) तो क्यामत के दिन अल्लाह से मुलाकात के वक्त उसके लिये कोई हुज्जत नहीं होगी और जो बैअत न करने की हालत में मर गया तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत है। (मुस्लिम १८५१)

171– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ ، فَلَمَّا قَدِمْنَا المَدِينَةَ قَالَ لِي: «اُدْخُلِ المَسْجِدَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: **3087، 715**]

१७१. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मैं एक सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ में था जब हम मदीना आये तो आप ने मुझसे फरमायाः जब तुम मुस्जिद में दाखिल हो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ो। (बुखारी ३०८७ मुस्लिम ७१५)

172– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:
«كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 6021، 1005]

१७२. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हर भलाई सदका है। (बुखारी ६०२१)

173– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَحِمَ
اللهُ رَجُلًا سَمْحًا إِذَا بَاعَ.، وَإِذَا اشْتَرَى ، وَإِذَا اقْتَضَى» [رَوَاهُ الْـــبُـــخَارِيُّ: 2076]

१७३. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ऐसे शख्स पर दया करे जो बेचते खरीदते और तक़ाज़ा करते वक्त नर्मी से काम ले। (बुखारी २०७६)

174– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:
«مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ: اَللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ ، وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّداً الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ ، حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ» [رَوَاهُ الْـــبُـــخَارِيُّ: 614]

१७४. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अजान सुन कर यह कहे ‘‘*अल्लाहुम्म रब्ब हाजिहिद दावतित ताम्मति वस्सलातिल काइमति आति*

मुहम्मद निल वसीलत वल फजीलत वब असहू मकामम महमूद अल लज़ी वअदतहू उसे क्यामत के दिन मेरी शिफाअत मिलेगी। (बुखारी-६१४)

175- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي اللَّيْلِ لَسَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللهَ خَيْراً مِّنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ، إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ ، وَذَلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 757]

१७५. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक रात में एक ऐसी घड़ी होती है मुस्लिम बन्दा उसमें अल्लाह से दुनिया और आखिरत की भलाई मांगता है तो अल्लाह उसको अता कर देता है और ऐसा हर रात में होता है। (मुस्लिम ७५७)

176- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ إِنَّ عَلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ عَهْداً لِمَنْ يَشْرَبُ الْمُسْكِرَ أَنْ يَسْقِيَهُ مِنْ طِينَةِ الْخَبَالِ ». قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا طِينَةُ الْخَبَالِ قَالَ «عَرَقُ أَهْلِ النَّارِ أَوْ عُصَارَةُ أَهْلِ النَّارِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 2002]

१७६. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह का यह अहद है कि जो नशाआवर चीज़ पियेगा तो उसको तीनतुल खबाल पिलायेगा सहाबा ने

पूछा ऐ अल्लाह के रसूल तीनतुल खबाल क्या है। आपने फरमायाः जहन्नमियों का पसीना। (मुस्लिम २००२)

177– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ خَافَ أَنْ لَا يَقُومَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوتِرْ أَوَّلَهُ، وَمَنْ طَمِعَ أَنْ يَقُومَ آخِرَهُ فَلْيُوتِرْ آخِرَ اللَّيْلِ ، فَإِنَّ صَلَاةَ آخِرِ اللَّيْلِ مَشْهُودَةٌ ، وَذَلِكَ أَفْضَلُ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 755]

१७७. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसको यह डर हो कि रात के आखिर में वित्र नहीं पढ़ सकेगा तो उसे चाहिये कि अव्वल वक्त में पढ़ ले और जो इस बात का इच्छुक हो कि रात की आखिरी पहर में पढ़े तो वह रात के आखिरी पहर में वित्र पढ़े बेशक रात की आखिरी नमाज गवाही देगी और यह अफज़ल है। (मुस्लिम ७५५)

178– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 82]

१७८. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आदमी को शिर्क और कुफ्र के बीच फर्क करने वाली चीज़ नमाज़ छोड़ना है। (मुस्लिम ८२)

179– عَنْ عَبْدِ اللّــهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللهَ لَا يَقْبِضُ الْعِلْمَ انْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ الْعِبَادِ، وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ ،حَتَّى إِذَا لَمْ يُبْقِ عَالِمًا، اِتَّخَذَ النَّاسُ رُؤُوْسًا جُهَّالًا،فَسُئِلُوا فَأَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ،فَضَلُّوا وَأَضَلُّوا» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ:100، 2673]

१७९. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह इल्म को इस तरह से नहीं उठा लेगा कि उसके बन्दों से छीन ले वह ओलमा को मौत देकर इल्म को उठायेगा यहां तक कि जब कोई आलिम बाकी नहीं रहेगा तो लोग जाहिलों को सरदार बना लगे उनसे सवालात किये जायेंगे और वह बगैर इल्म के जवाब देंगे इस लिये खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। (बुखरी १०० मुस्लिम २६७३)

180– عَنْ عَبْدِ اللّــهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنْ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاحِشًا وَلَا مُتَــفَحِّــشًا وَكَانَ يَقُولُ: «إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحْسَنَكُمْ أَخْلَاقًا» [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 3559، 2321]

१८०. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदजुबान और लड़ने झगड़ने वाले नहीं थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थेः तुम में से

सबसे बेहतर शख्स वह है जिसके अखलाक सबसे अच्छे हों। (बुखारी ३५५९ मुस्लिम २३२१)

181- عَنْ عَبْدِ اللّــهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِئِ ، وَلَكِنَّ الْوَاصِلُ الَّذِيْ إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا» [رَوَاهُ الْــبُــخَارِيُّ:5991]

१८१. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी काम का बदला देना सिला रहमी (रिश्ता नाता जोड़ना) नहीं है बल्कि सिला रहमी करने वाला शख्स वह है कि जब उसके साथ सिला रहमी का मामला न किया जा रहा हो तब भी वह सिला रहमी करे। (बुखारी ५९९१)

182- عَنْ عَبْدِ اللّــهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمُقْسِطِينَ عِنْدَ اللّــهِ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُورٍ عَنْ يَمِينِ الرَّحْمٰنِ ــ عَزَّ وَجَــلَّ ــ وَكِلْتَا يَدَيْهِ يَمِينٌ ، اَلَّذِينَ يَعْدِلُونَ فِي حُكْمِهِمْ وَأَهْلِيهِمْ وَمَا وَلُوْا» [رَوَاهُ مُــسْلِــمٌ: 1827]

१८२. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक इन्साफ करने वाले अल्लाह के यहां रहमान के दायें तरफ नूर के मिंबरों पह होगे और उसके दोनों हाथ

दायां हैं जो लोग अपने फैसलों में अपने परिवार में और अपने मातहतों के बारे में इंसाफ से काम लेते हैं। (मुस्लिम १८२७)

183– عَن جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةً، يَعْنِي الْبَدْرَ ، فَقَالَ: «إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هٰذَا الْقَمَرَ لَا تُضَامُّونَ فِي رُؤْيَتِهِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لَا تُغْلَبُوا عَلَى صَلَاةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا فَافْعَلُوا ، ثُمَّ قَرَأَ : ﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴾ » [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 554، 633]

१८३. जरीर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि उन्होंने कहा कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक रात चांद की तरफ देखा अर्थात चौदहवीं के चांद को तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक तुम लोग अपने रब को देखोगे जिस तरह चांद को दख रहे हो उसको देखने में तुम को कोई परेशानी नहीं होगी इस लिये अगर तुम ऐसा कर सकते हो कि सूरज निकलने से पहले वाली नमाज़ फज्र और सूरज डूबने से पहले वाली नमाज़ अस्र से तुम्हें कोई चीज़ रोक न सके तो ऐसा ज़रूर करो आप ने यह आयत तिलावत की “पस अपने मालिक की हम्द व तस्बीह कर सूरज निकलने और डूबने से पहले”। (बुखारी ५५४ मुस्लिम ६३३)

184– عَن جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَايَعْتُ رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى إِقَامِ الصَّلَاةِ ، وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ ، وَالنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ. [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 57 ، 97]

१८४. जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नमाज़ काइम करने जकात देने और हर मुसमलान को नसीहत करने के लिये बैअत की। (बुखारी ५७ मुस्लिम ६७)

185– عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ هَذِهِ النَّارَ إِنَّمَا هِيَ عَدُوٌّ لَكُمْ ، فَإِذَا نِمْتُمْ فَأَطْفِئُوهَا عَنْكُمْ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 6294، 2016]

१८५. अबू मूसा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक यह आग तुम्हारी दुश्मन है इसलिये जब सोओ तो उसको बुझा दिया करो। (बुखारी ६२६४ मुस्लिम २०१६)

186– عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا» وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 2446، 2585]

१८६. अबू मूसा रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये मकान की तरह है एक को दूसरे से सपोट (ताकत) मिलती है फिर आपने एक

हाथ की उंगली को दुसरे हाथ की उंगली में दाखील किया। (बुखारी २४४६ मुस्लिम२५८५)

187– عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ» قَالَ: ثُمَّ قَرَأَ: ﴿.وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ﴾ [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 4686، 2583]

१८७. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह जालिम को मोहलत देता है लेकिन जब पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता है। फिर आप ने यह आयत पढ़ी ‘‘और तेरे परवरदिगार की पकड़ इसी तरह है जब वह बस्ती वालों को पकड़ता है जो अपने ऊपर जुल्म करते हैं बेशक अल्लाह की पकड़ बड़ी तकलीफ देने वाली और बड़ी सख्त है’’। (बुखारी ४६८६ मुस्लिम २५८३)

188– عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ ؛ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ ، وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ ؛ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ ، حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 2759]

१८८. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला रात में अपने हाथ को फैलाता है ताकि दिन में बुराई करने वाला तौबा कर ले और अल्लाह तआला दिन में

अपने हाथ को फैलाता है ताकि रात में बुराई करने वाला तौबा करले यहां तक कि सूरज पश्चिम से निकले। (मुस्लिम २७५९)

189– عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فُكُّوا الْعَانِيَ ، وَأَطْعِمُوا الجَائِعَ ، وَعُودُوا المَرِيضَ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 3046]

१८९. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कैदी को छुड़ाओ भूखे को खाना खिलाओ और बीमार की इयादत (हाल चाल मालूम) करो। (बुखारी ३०४६)

190– عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ أَوْ سَافَرَ ، كُتِبَ لَهُ مِثْلُ مَا كَانَ يَعْمَلُ مُقِيمًا صَحِيحًا» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 2996]

१९०. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब बन्दा बीमार होता या सफर करता है तो उसके लिये उन तमाम इबादतों का सवाब लिखा जाता है जिन को वह घर या तनदुरूस्ती के वक्त किया करता था। (बुखारी २९९६)

191– عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ــ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ «لَا يَرْمِي رَجُلٌ رَجُلًا بِالْفُسُوقِ ، وَلَا يَرْمِيهِ بِالْكُفْرِ ، إِلَّا ارْتَدَّتْ عَلَيْهِ إِنْ لَمْ يَكُنْ صَاحِبُهُ كَذَلِكَ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: 6045]

१६१. अबू जर रजिअल्लाहो तआला बयान करते हैं कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते हुये सुनाः अगर कोई शख्स किसी पर कुफ्र और फिस्क् का इलजाम लगाये और वह हकीकत में काफिर या फासिक न हो तो खुद कहने वाला काफिर या फासिक् हो जाता है। (बुखारी ६०४५)

192– عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قِيلَ لِرَسُولِ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرَأَيْتَ الرَّجُلَ يَعْمَلُ الْعَمَلَ مِنَ الْخَيْرِ وَيَحْمَدُهُ النَّاسُ عَلَيْهِ قَالَ: «تِلْكَ عَاجِلُ بُشْرَى الْمُؤْمِنِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ: 2642]

१६२. अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया उस आदमी के बारे में आप का क्या ख्याल है जो भलाई का काम करता है तो लोग उसकी प्रशंसा (तारीफ) करते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह मोमिन के लिये फौरी खुश्खबरी है। (मुस्लिम २६४२)

193– عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيمُ الحَلِيمُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمٰوَاتِ ، وَرَبُّ الْأَرْضِ ، وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 6346، 2730]

१६३. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुख परेशानी के वक्त यह कहते थे ‘‘लाइलाहा इल्लल्लाहुल

अजीमुल हलीम लाइलाहा इल्लल्लाहो रब्बुल अर्शिल अजीम लाइलाहा इल्लल्लाहो रब्बुस्समावातो व-रब्बुल अर्ज़ व रब्बुल अर्शिल करीम'' (बुखारी ६३४६ मुस्लिम २७३०)

194– عن ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغَى ثَالِثًا، وَلَا يَمْلَأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ ، وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 6436، 1048]

१९४. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुये सुना अगर आदम की औलाद (इंसान) के पास दौलत की दो वादियां हो जायें तो वह तीसरे की इच्छा करेगा और आदम की औलाद का पेट केवल मिटटी ही भर सकती है और जो अल्लाह से तौबा करेगा तो अल्लाह उसके तौबा को कुबूल करेगा। (बुखारी ६४३६ मुस्लिम १०४८)

195– عن حَكِيمِ بْنَ حِزَامٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اَلْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا ، فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّنَا بُورِكَ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا ، وَإِنْ كَذَبَا وَكَتَمَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 2110، 1532]

१९५. हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते ह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः खरीदने और बेचने वाले जब तक एक दूसरे से अलग न हो जायें उन्हें इख्तियार बाकी रहता है, अब अगर दोनों ने

सच्चाई अपनायी और हर बात साफ साफ बयान किया तो उनके बेचने और खरीदने में बरकत होती है और अगर झूठ बोला और कोई बात छिपायी तो उनकी तिजारत से बरकत खत्म कर दी जाती है। (बुखारी २११० मुस्लिम १५३२)

196– عَنْ سَعْد بن أبي وقاص رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ تَصَبَّحَ سَبْعَ تَمَرَاتٍ عَجْوَةً لَمْ يَضُرَّهُ ذٰلِكَ الْيَوْمَ سُمٌّ وَلَا سِحْرٌ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 5769، 2047]

१९६. सअद बिन अबू वक़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुये सुना जिसने सुबह सवेरे सात अज़्वा खुजूरें खायीं तो उस दिन उसपर कोई जहर और जादू असर नहीं करेगा। (बुखारी ५७६९ मुस्लिम २०४७)

197– عَنْ عَبْدِ اللهِ بن مَسعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ، وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَّا بِإِحْدٰى ثَلَاثٍ: اَلنَّفْسُ بِالنَّفْسِ ، وَالثَّيِّبُ الزَّانِي ، وَالْمَارِقُ مِنْ الدِّينِ التَّارِكِ لِلْجَمَاعَةِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 6878، 1676]

१९७. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मुसलमान यह गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह क

रसूल हैं, उस का खून हलाल नहीं है मगर तीन चीज़ों की वजह से। जान के बदले जान, शादीशुदा होकर ज़िना करने वाला और इस्लाम से निकल जाने वाला, जमाअत को छोड़ देने वाला। (बुखारी ६८७८ मुस्लिम १६७६)

198– عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُ نَفَقَةً عَلَى أَهْلِهِ وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا ، كَانَتْ لَهُ صَدَقَةً.» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 5351، 1002]

१९८. अबू मसऊद अनसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई मुसलमान अल्लाह का हुक्म मानने के मकसद से अपने बाल बच्चों पर खर्च करता है तो यह उसके लिये सदका होता है। (बुखारी ५३५१, मुस्लिम १००२)

199– عَنْ زَيْدِ بْنُ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَدْ غَزَا ، وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللهِ بِخَيْرٍ فَقَدْ غَزَا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 2843، 1895]

१९९. जैद बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले के लिये सामान तैयार करके दिया तो गोया वह खुद जिहाद में गया। और जिसने भलाई से जिहाद करने वाले के घर बार

की निगरानी की तो गोया कि उसने खुद भी जिहाद किया। (बुखारी २८४३ मुस्लिम १८६५)

200– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بَرَكَةً» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1923، 1095]

२००. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सेहरी खाया करो क्योंकि सेहरी खाने में बरकत है। (बुखारी १९२३, मुस्लिम १०९५)

201– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا يَنْظُرُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ بَطَرًا)) [متفق عليه:2087،5788]

२०१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला क्यामत के दिन उस शख्स की तरफ नहीं देखेगा जो अपने तहबन्द को घमण्ड से लटकाया रहा होगा। (बुखारी २०८७ मुस्लिम ५७८८)

202– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((قَالَ اللهُ: أَنْفِقْ يَا ابْنَ آدَمَ أُنْفِقْ عَلَيْكَ)) [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 5352، 993]

२०२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह ने कहाः ऐ आदम की औलाद खर्च करो तुम पर भी खर्च किया जायेगा। (बुखारी ५३५२, मुस्लिम ९९३)

203– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ، أَوَ يُنَصِّرَانِهِ، أَوْ يُمَجِّسَانِهِ [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 4775، 2658]

२०३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर बच्चा फितरत इस्लाम पर पैदा होता है लेकिन उसके मां बाप उसको यहूदी बना देते हैं या ईसाई बना देते हैं या मजूसी बना देते हैं। (बुखारी ४७७५, मुस्लिम २६५८)

204– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((قَاتَلَ اللهُ الْيَهُودَ ؛ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)) [متفق عليه: 437 ،530]

२०४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यहूदियों पर अल्लाह की लअनत हो उन्होंने अपने नबियों की कब्रों को सजदागाह बना लिया। (बुखारी ४३७ मुस्लिम ५३०)

205– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي ، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي ، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ، ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَإٍ، ذَكَرْتُهُ فِي مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ

بِشِبْرٍ ، تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا ، تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا ، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي، أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً)) [متفق عليه: 7405 ، 2675]

२०५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं और जब भी वह मुझे याद करता है मैं उसके साथ होता हुं जब वह मुझ दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूं और जब वह मुझे मज्लिस में याद करता है तो मैं उससे बेहतर फरिश्तों की मज्लिस में याद करता हूं और अगर वह मुझ से एक बालिश्त करीब आता है तो मैं उसके एक हाथ करीब हो जाता हूं और अगर वह मेरे एक हाथ करीब आता है तो मैं उससे दो हाथ करीब हो जाता हूं अगर वह मेरे पास चलकर आता है तो मैं उसके पास दौड़ कर आता हूं। (बुखारी ७४०५, मुस्लिम २६७५)

206– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمْ اللهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ : إِمَامٌ عَدْلٌ ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللهِ ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي المَسَاجِدِ ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللهِ اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللهَ ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: 1423، 1031]

२०६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सात किस्म के लोगों को अल्लाह अपने अर्श के साये में रखेगा उस दिन उसके सिवा और कोई साया नहीं होगा इन्साफ करने वाला हाकिम, वह नौजवान जिसने अपनी जवानी को अल्लाह की इबादत में गुज़ारी हो, वह शख्स जिस का दिल हर वक्त मस्जिद से लगा रहे। जो अल्लाह के लिये मुहब्बत करते हों उसी पर जमा होते और उसी पर अलग होते हों, ऐसा शख्स जिसको किसी खूबसूरत और इज्ज़तदार औरत ने बुलाया तो उसने कहा हो कि मैं अल्लाह से डरता हूं वो इन्सान जो सदका करे और उसको इस तरह छिपाये कि बायें हाथ को भी खबर न हो कि दायें हाथ ने क्या खर्च किया और जो शख्स अल्लाह को तनहाई में याद करे और उसकी आखें आंसुओं से बहने लगें। (बुखारी १४२३, मुस्लिम १०३१)

207– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ــ ﷺ ــ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيۡهِوَسَلَّمَ قَالَ: ((يَدُ اللهِ مَلْأَى لَا يَغِيضُهَا نَفَقَةٌ ، سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ، وَقَالَ: أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ، فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ)) [البخاري: 7411]

२०७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह का हाथ भरा हुआ है उसे रात दिन की बख्शिश भी कम नहीं करती। आपने फरमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि उसने आसमान और जमीन को पैदा करने से लेकर अब तक

कितना खर्च किया है उसने भी इसमें कोई कमी पैदा नहीं की जो उसके हाथ में है (बुखारी ७४११)

208– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللّـــهِ ﷺ قَالَ: ((اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا هُنَّ ؟ قَالَ: ((الشِّرْكُ بِاللهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلَّا بِالْحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبَا، وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ، وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ)) [متفق عليه: 6857 ، 89]

२०८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम सात हलाक कर देने वाली चीज़ों से बचो। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! वह हलाक कर देने वाली क्या हैं। आपने फरमायाः अल्लाह के साथ शिर्क, जादू, नाहक किसी की जान लेना जिसको अल्लाह ने हराम किया है, सूद खाना, अनाथ के माल को खाना, जंग के दिन पीठ फेरना, आर पाकदामन मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना (बुखारीः६८५७, मुस्लिम ८६)

209– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللّـــهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَرَدَّى مِنْ جَبَلٍ فَقَتَلَ نَفْسَهُ ؛ فَهُوَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ يَتَرَدَّى فِيهِ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا ، وَمَنْ تَحَسَّى سُمًّا فَقَتَلَ نَفْسَهُ ؛ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ ؛ فَحَدِيدَتُهُ فِي يَدِهِ يَجَأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا)) [مُـــتَّـــفَقٌ عَلَيْهِ: 5578، 109]

२०९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स खुद को पहाड़ से गिरा कर कत्ल कर दे तो वह शख्स जहन्नम में हमेशा ऐसे ही गिरता रहेगा और जिसने खुद को जहर खा कर कत्ल कर दिया तो उसके हाथ में जहर होगा जिसको वह हमेशा जहन्नम में खाता रहेगा और जिसने खुद को लोहे के हथियार से कत्ल कर दिया तो क्यामत के दिन उसके हाथ में लोहे का हथियार होगा जिसको जहन्नम में हमेशा अपने पेट में घूंपता रहेगा। (बुखारी ५५७८ मुस्लिम १०९)

210– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((الْإِيمَانُ بِضْعٌ وَسِتُّونَ شُعْبَةً ، وَالْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنْ الْإِيمَانِ)) [متفق عليه: 9 ، 35]

२१०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ईमान की ६० से ऊपर शाखाएं हैं और हया भी ईमान की एक शाख है। (बुखारी ९ मुस्लिम ३५)

211– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ يُدَايِنُ النَّاسَ ، فَكَانَ يَقُولُ لِفَتَاهُ: إِذَا أَتَيْتَ مُعْسِرًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ ؛ لَعَلَّ اللهَ يَتَجَاوَزُ عَنَّا ، فَلَقِيَ اللهَ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ)) [متفق عليه: 3480 ،1562]

२११. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

एक शख्स लोगों को कर्ज दिया करता था और अपने नोकरों से उसने यह कह रखा था कि जब तुम किसी मुफ्लिस को दो जो मेरा कर्जदार हो तो उसे मआफ कर दिया करो संभव है कि अल्लाह तआला भी हम को मआफ कर दे। आप ने फरमायाः जब वह अल्लाह से मिला तो अल्लाह ने उसे बख्श दिया। (बुखारी ३४८० मुस्लिम १५६२)

212– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ ، إِلَّا الصَّوْمَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ ، وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللهِ مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ)) [متفق عليه: 5927 ، 1151]

२१२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ने फरमायाः इब्ने आदम का हर कर्म उसका है सिवा रोज़ा के ये मेरा है और मैं खुद इसका बदला दूंगा और रोज़ेदार के मुंह की खुश्बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की खुश्बू से भी बढ़कर है। (बुखारी ५९२७ मुस्लिम ११५१)

213– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((تَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ ، وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ)) [متفق عليه: 6616 ، 2707]

२१३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह से पनाह मांगा करो आजमाइश की मशक्कत, बदबख्ती की पस्ती, बुरे खात्मे और दुश्मन के हंसने से। (बुखारीः ६६१६, मुस्लिम २७०७)

214– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ ﷺ قَالَ: ((السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنْ الْعَذَابِ ؛ يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ نَوْمَهُ ، وَطَعَامَهُ ، وَشَرَابَهُ ، فَإِذَا قَضَى أَحَدُكُمْ نَهْمَتَهُ فَلْيُعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ)) [متفق عليه:1927،3001]

२१४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सफर अज़ाब का एक टुकड़ा है, वह तुम में से किसी को सोने से खाने से और पीने से रोकता है तो जब तुम्हारा मक़सद पूरा हो जाये तो अपने घर की तरफ जल्दी लौट आओ। (बुखारी १९२७ मुस्लिम ३००१)

215– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ أَبِيهِ فَهُوَ كُفْرٌ)) [متفق عليه: 62،6768]

२१५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने बाप से मुंह न फेरो जिसने अपने बाप से मुंह मोड़ा तो उसने कुफ्र किया। (बुखारी ६२ मुस्लिम ६७६८)

216– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّىٰٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: ((مَا أَذِنَ اللهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِيٍّ حَسَنِ الصَّوْتِ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ يَجْهَرُ بِهِ))
[متفق عليه: 7544 ، 792 – وهذا لفظ مسلم]

२१६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला किसी चीज़ को इतने ध्यान से नहीं सुनता जितने ध्यान से अच्छी आवाज़ से पढ़ने पर नबी के कुरआन मजीद को सुनता है (बुखारी ७५४४ मुस्लिम ७९२ यह शब्द मुस्लिम के हैं)

217– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّىٰٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: ((لَوْ كَانَ لِي مِثْلُ أُحُدٍ ذَهَبًا ، مَا يَسُرُّنِي أَنْ لَا يَمُرَّ عَلَيَّ ثَلَاثٌ وَعِنْدِي مِنْهُ شَيْءٌ، إِلَّا شَيْءٌ أُرْصِدُهُ لِدَيْنٍ)) [متفق عليه: 2389، 991]

२१७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तब भी मुझे यह पसन्द नहीं कि तीन दिन गुज़र जाये और उसका कोई हिस्सा मेरे पास रह जाये सिवाय उसके जो मैं कर्ज देने के लिये छोड़ दूं। (बुखारी २३८९ मुस्लिम ९९१)

218– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّىٰٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: ((لَقَابُ قَوْسٍ فِي الْجَنَّةِ ، خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ الشَّمْسُ وَتَغْرُبُ)) [متفق عليه: 2793،991]

२१८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जन्नत में एक कमान (हाथ) की जगह दुनिया की उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज निकलता और डूबता है। (बुखारी २७९३ मुस्लिम ९९१)

219– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: يَشْتِمُنِي ابْنُ آدَمَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ أَنْ يَشْتِمَنِي ، وَيُكَذِّبُنِي وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ، أَمَّا شَتْمُهُ فَقَوْلُهُ: إِنَّ لِي وَلَدًا ، وَأَمَّا تَكْذِيبُهُ فَقَوْلُهُ: لَيْسَ يُعِيدُنِي كَمَا بَدَأَنِي)) [البخاري: 3193]

२१९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है कि आदम की औलाद मुझे गाली देती है और उसके लिये यह उचित नहीं कि वह मुझे गाली दे, वह मुझे झुठलाते है और उसके लिये यह उचित नहीं कि वह मुझे झठलाये। उसकी गाली यह है कि वह कहता है कि मेरे पास बेटा है और उसका झुठलाना यह है कि वह कहता है कि जिस तरह से अल्लाह ने मुझे पहली बार पैदा किया था दोबारा वह मुझे जिन्दा नहीं कर सकेगा। (बुखारी ३१९३)

220– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَا يَدْخُلُ أَحَدٌ الجَنَّـةَ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ لَوْ أَسَاءَ ؛ لِيَزْدَادَ شُكْرًا، وَلَا يَدْخُلُ النَّارَ أَحَدٌ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ الجَنَّةِ لَوْ أَحْسَنَ ؛ لِيَكُونَ عَلَيْهِ حَسْرَةً) [البخاري: 6569]

२२०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जन्नत में जो भी दाखिल होगा उसको जहन्नम का ठिकाना भी दिखाया जायेगा कि अगर नाफरमानी की होती तो वहां उसे जगह मिलती ताकि वह और ज़्यादा शुक्र अदा करे और जो भी जहन्नम में दाखिल होगा उसे उसके जन्नत का ठिकाना भी दिखाया जायेगा कि अगर अच्छे अमल किये होते तो वहां जगह मिलती ताकि उसके लिये हसरत और अफसोस का सबब बने। (बुखारी ६५६९)

221– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ أَدَاءَهَا ، أَدَّى اللهُ عَنْهُ ، وَمَنْ أَخَذَ يُرِيدُ إِتْلَافَهَا أَتْلَفَهُ اللهُ[البخاري: 2387]

२२१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोगों के माल को देने के इरादे से लेता है तो अल्लाह तआला अदा करवा देता है और जो लोगों के माल को न देने के इरादे से लेता है तो अल्लाह तआला उसके माल को खत्म कर देता है। (बुखारी २३८७)

222– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَعْطَى بِي ثُمَّ غَدَرَ ، وَرَجُلٌ بَا عَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ ، وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ)) [البخاري: 2270]

२२२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कि अल्लाह कहता है, तीन किस्म के लोग ऐसे हैं जिनका मैं क्यामत के दिन खुद मुददई बनूंगा एक तो वह शख्स जिसने मेरे नाम पर अहद (वादा) किया और फिर वादा खिलाफी की। दूसरा वह शख्स जिसने किसी आज़ाद आदमी को बेच कर उसकी कीमत को खा लिया और तीसरा वह शख्स जिसने किसी से मजदूरी करवायी काम उससे पूरा पूरा लिया लेकिन उसकी मजदूरी नहीं दी। (बुखारी २७७०)

223– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ (كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْتَكِفُ فِي كُلِّ رَمَضَانٍ عَشْرَةَ أَيَّامٍ فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ اعْتَكَفَ عِشْرِينَ يَوْمًا) [البخاري:2044]

२२३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान में हर साल दस दिनों का एतेकाफ करते थे लेकिन जिस साल आप का इन्तेकाल हुआ उस साल बीस दिनों का एतेकाफ किया था। (बुखारी २०४४)

224– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَمْحُو اللهُ بِهِ الخَطَايَا وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ)) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ الله ، قَالَ: ((إِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى المَكَارِهِ ، وَكَثْرَةُ الخُطَا إِلَى المَسَاجِدِ ، وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَذَلِكُمْ الرِّبَاطُ)) [مسلم:251]

२२४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या मैं तुमको न बतलाऊं वह बातें जिनसे गुनाह मिट जाती हैं और दर्जे बुलन्द हो जाते हैं। लोंगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल क्यों नहीं बताइये आपने फरमायाः तक्लीफ की हालत में पूरा पूरा वजू करना, और घर से मस्जिद दूर होने के बावजूद मस्जिद बार बार जाना, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इनतेज़ार करना, यही रिबात है। (मुस्लिम २५१)

225– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ تَطَهَّرَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ مَشَى إِلَى بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ الله ؛ لِيَقْضِيَ فَرِيضَةً مِنْ فَرَائِضِ الله؛ كَانَتْ خَطْوَتَاهُ إِحْدَاهُمَا تَحُطُّ خَطِيئَةً، وَالْأُخْرَى تَرْفَعُ دَرَجَةً)) [مسلم:666]

२२५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अपने घर में पाकी (पवित्रता) हासिल की फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की तरफ गया ताकि अल्लाह के फराइज में से किसी फरीजे को पूरा करे। तो एक कदम से उसकी गलतियों को मिटा देता है और दूसरे उसके दर्जे को बुलन्द कर देता है। (मुस्लिम ६६६)

226– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((رَغِمَ أَنْفُ ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ)) قِيلَ: مَنْ يَا رَسُولَ الله ؟ قَالَ: ((مَنْ أَدْرَكَ أَبَوَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ ، أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا ، فَلَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ)) [مسلم:2551]

२२६. अबू हुरैरा रज़ियल्लाह तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उसकी नाक धूल धूसरित (खाक आलूद) हो उसकी नाक खाक आलूद हो उसकी नाक खाक आलूद हो पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल किस की नाक खाक आलूद हो? फरमायाः जिसने अपने मां बाप में किसी एक को या दोनों को बुढ़ापे में पाया और उनकी खिदमत ना करके जन्नत में नहीं जा सका। (मुस्लिम २५५१)

227– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا ، تَابَ اللهُ عَلَيْهِ)) [مسلم: 2703]

२२७. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने सूरज के पश्चिम से निकलने से पहले तौबा कर ली तो अल्लाह उसकी तौबा को कुबूल कर लेगा। (मुस्लिम २७०३)

228– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((كَافِلُ الْيَتِيمِ لَهُ أَوْ لِغَيْرِهِ أَنَا وَهُوَ كَهَاتَيْنِ فِي الجَنَّةِ)) وَأَشَارَ مَالِكٌ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى . [مسلم:2983]

२२८. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यतीम की किफालत (देख भाल) करने वाला चाहे उसके खानदान का हो या दूर का हो मैं और किफालत करने वाला जन्नत में इस

तरह होंगे। और मालिक ने शहादत की उंगली और बीच की उंगली की तरफ इशारा किया। (मुस्लिम २९८३)

229– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: ((أَحَبُّ الْبِلَادِ إِلَى اللهِ مَسَاجِدُهَا ، وَأَبْغَضُ الْبِلَادِ إِلَى اللهِ أَسْوَاقُهَا)) **[مسلم: 671]**

२२९. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक आबादियों में सब से प्रिय जगह मसाजिद हैं और सबसे अप्रिय जगह बाज़ार है। (मुस्लिम ६७१)

230– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ قَالَ: ((مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللهِ ، يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ ، إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمْ السَّكِينَةُ ، وَغَشِيَتْهُمْ الرَّحْمَةُ ، وَحَفَّتْهُمْ الْمَلَائِكَةُ ، وَذَكَرَهُمْ اللهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ) **[مسلم:2699]**

२३०. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोग अल्लाह के घर में जमा हो कर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और एक दूसरे को सिखाते हैं तो अल्लाह उनपर अम्न व सुख नाजिल करता है और अल्लाह की रहमत उनको ढांप लेती है और फरिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह उनका जिक्र करता है जो उसके पास होते हैं। (मुस्लिम २६९९)

231– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِذَا تَشَهَّدَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللهِ مِنْ أَرْبَعٍ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ)) [مسلم: 588]

२३१. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई तशहूहुद में जाये तो अल्लाह से चार चीज़ों से पनाह मांगे यह कहेः
अल्लाहुम्म इन्नी अऊजू बिक मिन अजाबि जहन्नम व मिन अजाबिल कबरी व मिन फितनतिल महया वल ममाती व मिन शर–री फितनतिल मसीहिद दज्जाल, ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आताहुं कबर और जहन्नम के अजाब से मौत और जिन्दगी के फितने से और दज्जाल के फितने से तेरी पनाह में आताहुं (मुस्लिम ५८८)

232– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّــهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:(إِذَا قَالَ الرَّجُلُ هَلَكَ النَّاسُ فَهُوَ أَهْلَكُهُمْ)[مسلم: 2623]

२३२. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब आदमी कहता है लोग हलाक हो गये तो उसने लोगों का हलाक कर दिया। (मुस्लिम २६२३)

233– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَلْيَأْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَلْيُكَفِّرْ عَنْ يَمِينِهِ) [مسلم: 1650]

२३३. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी बात पर क़सम खाई फिर कोई दूसरी चीज़ उससे बेहतर देखी तो बेहतर को अंजाम दे और अपनी क़सम का कफ्फारा अदा कर दे। (मुस्लिम १६५०)

234– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (خَيْرُ يَوْمٍ طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ يَوْمُ الْجُمُعَةِ ، فِيهِ خُلِقَ آدَمُ ، وَفِيهِ أُدْخِلَ الْجَنَّةَ، وَفِيهِ أُخْرِجَ مِنْهَا) [مسلم: 854]

२३४. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सबसे बेहतर दिन जिस पर सूरज निकला वह जुमा का दिन है इसी दिन आदम को पैदा किया गया इसी दिन जन्नत में दाखिल किया गया और इसी दिन जन्नत स आदम को निकाला गया। (मुस्लिम ८५४)

235– عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّـهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيُجِبْ ، فَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيُصَلِّ ، وَإِنْ كَانَ مُفْطِرًا فَلْيَطْعَمْ [مسلم:1431]

२३५. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई

तुमको दावत दे तो उसको कुबूल करो अगर रोज़दार हो तो दुआ दे और अगर रोज़े से न हो तो खाना खा ले। (मुस्लिम १४३१)

236– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الْأَلَدُّ الْخَصِمُ) [متفق عليه: 4523 ، 2457]

२३६. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक लोगों में सबसे ज्यादा नापसन्द (अप्रिय) वह है जो सख्त झगड़ालू हो। (बुखारी ४५२३ मुस्लिम २४५७)

237– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ :(سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي [متفق عليه: 4293 ، 448]

२३७. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूकूअ और सजदों में कहते थे सुबहा-न कल्ला हुम्म रब्बना व बिहमदिक अल्लाहुम्मग फिरली (बुखारी ४२६३, मुस्लिम ४४८)

238– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا) قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ ، فَقَالَ: الْأَمْرُ أَشَدُّ مِنْ أَنْ يُهِمَّهُمْ ذَاكِ) [متفق عليه: 6527 ، 2859]

२३८. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम नंगे पांव

नंगे शरीर और बिना खतना के उठाये जाओगे। आइशा बयान करती हैं कि मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मर्द आर औरतें एक दूसरे को देखेंगे आप ने फरमायाः उस वक्त मामला बहुत सख्त होगा कोई इसका ख्याल भी नहीं कर सकेगा। (बुखारी ६५२७ मुस्लिम २८५६)

239– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (مَا خُيِّرَ رَسُولُ الله صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلَّا أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا ، مَا لَمْ يَكُنْ إِثْـــمًا ، فَإِنْ كَانَ إِثْـــمًا، كَانَ أَبْـــعَدَ النَّاسِ مِنْهُ) [متفق عليه:6126 ، 3560]

२३९. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो जायज मामलों में उसी को अपनाते थे जो सबसे ज्यादा आसान होता था और जिस में गुनाह का मामला नहीं होता था अगर गुनाह का मामला हो तो आप उससे लोगों में सबसे ज्यादा दूर रहते थे। (बुखारी ६१२६, मुस्लिम ३२६०)

240– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ خُذُوا مِنَ الْأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ ، فَإِنَّ اللهَ لَا يَمَلُّ حَتَّى تَمَلُّوا ، وَإِنَّ أَحَبَّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللهِ مَا دَامَ وَإِنْ قَلَّ))[متفق عليه:5862 ، 782]

२४०. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों अमल उतना ही करो जितना करने की ताकत हो बेशक अल्लाह तआला थकता

नहीं है जब तक तुम अमल से थक न जाओ और अल्लाह के नजदीक सबसे प्रिय अमल वह है जिसको पाबन्दी से हमेशा किया जाये चाहे वह कम ही क्यु ना हो। (बुखारी ५८६२ मुस्लिम ७८२)

241– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: لَوْ أَدْرَكَ رَسُولُ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا أَحْدَثَ النِّسَاءُ لَمَنَعَهُنَّ المَسْجِدَ كَمَا مُنِعَتْ نِسَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ) [متفق عليه:445،869]

२४१. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह मालूम होता कि औरतों की तरफ से क्या नई बात पैदा हो जायेगी तो उनको मस्जिदों मे जाने से मना कर देते जिस तरह बनी इस्राईल की औरतों को मना कर दिया गया था। (बुखारी ५८६२ मुस्मिल ७८२)

242– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ (مَا شَبِــعَ آلُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنْذُ قَدِمَ المَدِينَةَ مِنْ طَعَامِ بُرٍّ ثَلَاثَ لَيَالٍ تِبَاعًا حَتَّى قُبِضَ[متفق عليه: 2970،6454]

२४२. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि आल मुहम्मद मदीना आने के बाद निरन्तर तोन रात तक गेहूं से बना खाना नहीं खाया यहां तक कि आप का इन्तेकाल हो गया। (बुखारी ६४४५ मुस्लिम २६७०)

243– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّـــبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا مِنْ شَيْءٍ يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ حَتَّى الشَّوْكَةِ تُصِيبُهُ ، إِلَّا كَتَبَ اللهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً أَوْ حُطَّتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ [متفق عليه:5640، 2573]

२४३. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मुसीबत भी किसी मोमिन को पहुंचती है यहां तक कि कोई कांटा भी चुभता है तो उसके बदले में अल्लाह एक नेकी लिख देता है या उसके बदले में एक गुनाह मिटा दिया जाता है। (बुखारी ५६४० मुस्लिम २५७३)

244– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ:كَانَ رَسُولُ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَفَثَ فِي كَفَّيْهِ بِـــ: قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ وَبِالْمُعَوِّذَ تَيْنِ جَمِيعًا ، ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ ، وَمَا بَلَغَتْ يَدَاهُ مِنْ جَسَدِهِ ، يَفْعَلُ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ) [البخاري: 5748،5018

२४४. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोने के लिये अपने बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हथेलियों पर कुल हुवल्लाहो अहद और सूर मऊज़्तैन पढ़कर दम करते फिर दोनों हाथों को अपने चेहरे पर और जिस्म के जिस हिस्से तक हाथ पहुंच जाता उस पर फेरते आप इस तरह तीन बार करते थे। (बुखारी ५७४८ मुस्लिम ५०१८)

245– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (يَرْحَمُ اللهُ نِسَاءَ الْمُهَاجِرَاتِ الْأُوَلَ ، لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ: ﴿ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ ﴾ أَخَذْنَ أُزْرَهُنَّ فَشَقَّقْنَهَا مِنْ قِبَلِ الحَوَاشِي فَاخْتَمَرْنَ بِهَا) [البخاري:4759]

२४५. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला उन औरतों पर रहम करे जिन्होंने पहले हिजरत की थी जब अल्लाह ने यह आयत ‘‘और अपने दुपटटे अपने सीनों पर डाले रहा करें’’ नाज़िल की तो उन औरतों ने अपने तहबन्दों को दोनों किनारों से फाड़ कर उन की ओढ़नियां बना लीं। (बुखारी ४७५६)

246– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (.كَانَ النبيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَأَى المَطَرَ قَالَ: اللَّهُمَّ صَيِّـــبًا نَافِعًا) [البخاري: 1032]

२४६. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बारिश होती तो यह दुआ करते अल्लाहुम्म सैययिबन नाफिया ‘‘ऐ अल्लाह नफा पहुंचाने वाली बारिश बरसा’’। (बुखारी १०३२)

247– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ الله ، إِنَّ لِي جَارَيْنِ فَإِلَى أَيِّهِمَا أُهْدِي ؟ قَالَ: ((إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا)) [البخاري: 2259]

२४७. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं म उन दोनों में से किस को हदया दूं आपने फरमायाः उन दोनों में से जिसका दरवाज़ा तुम्हारे दरवाज़े से करीब हो। (बुखारी २२५९)

248– عَنْ عَـــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (.كَانَ رَسُولُ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْبَلُ الهَدِيَّةَ وَيُثِيبُ عَلَيْهَا) [البخاري: 2585]

२४८. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हदया कुबूल करते थे और इस पर दुआ भी देते थे। (बुखारी २५८५)

249– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا عَصَفَتْ الرِّيحُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ)) [مسلم:899]

२४९. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि जब आंधी चलती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते ''अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक खैरहा व खैरा मा फोहा व खैरा मा उर सिलत बिही व अजूबिका मिन शरिहा व शर्रिमा फीहा व शर्रिमा उर सिलत बिहि'' (मुस्लिम८९९)

250– عَنْ عَــائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّــبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:(الرَّحِمُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَقُولُ مَنْ وَصَلَنِي وَصَلَهُ اللهُ ، وَمَنْ قَطَعَنِي قَطَعَهُ اللهُ [متفق عليه:5989، 2555]

२५०. आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है वह कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे तोड़ेगा उसको अल्लाह भी तोड़ेगा। (बुखारी ५९८९ मुस्लिम २५५५)

251- عَنْ عَبْدِ اللَّــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((﴿ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴾ حَتَّى يَغِيبَ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ)) [متفق عليه:2862،4938]

२५१. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे तो तुममें से कोई भी अपने कान की लौ तक पसीने में डूब जायेगे। (बुखारी २८६२ मुस्लिम ४६३८)

252- عَنْ عَبْدِ اللَّــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا صَارَ أَهْلُ الجَنَّةِ إِلَى الجَنَّةِ ، وَأَهْلُ النَّارِ إِلَى النَّارِ ، جِيءَ بِالمَوْتِ حَتَّى يُجْعَلَ بَيْنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ ، ثُمَّ يُذْبَحُ ، ثُمَّ يُنَادِي مُنَادٍ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ لَا مَوْتَ ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ لَا مَوْتَ ؛ فَيَزْدَادُ أَهْلُ الجَنَّةِ فَرَحًا إِلَى فَرَحِهِمْ ؛ وَيَزْدَادُ أَهْلُ النَّارِ حُزْنًا إِلَى حُزْنِهِمْ)) [متفق عليه: 6548 ، 2850]

२५२. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब जन्नती जन्नत में चले जायेंगे और जहन्नमी जहन्नम में चले जायेंगे। तो मौत को लाया जायेगा फिर उसको जन्नत और जहन्नम के बीच रख कर जबह कर दिया जायेगा फिर एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगायेगा ऐ जन्नत वाला अब तुम्हें मौत नहीं आयेगी और ऐ जहन्नम वालो अब तुम्हें मौत

नहीं आयेगी यह सुन कर जन्नती और खुश हो जायेंगे और जहन्नमी और गमगीन हो जायेगे। (बुखारी ६५४८ मुस्लिम २८५)

253– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، وَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِالله[متفق عليه: 1646،7401]

२५३. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने बाप दादाओं की क़सम न खाओ, और जिसको कसम खाना हो तो वह अल्लाह की कसम खाये। (बुखारी १६४६ मुस्लिम ७४०१)

254– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَرَضْيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَا حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ ، يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ إِلَّا وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ)) [متفق عليه: 2738، 1627]

२५४. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी मुसलमान के लिये जिनके पास वसिय्यत का कोई भी माल हो दुरूस्त नहीं कि दो रात भी वसिय्यत को बगैर अदा किए लिख कर अपने पास महफ़ूज़ रखे । (बुखारी २७३८ मुस्लिम १६२७)

255– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا ، أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ، ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ)) [متفق عليه: 7108 ، 2879]

२५५. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह किसी कौम पर अज़ाब उतारता है तो अज़ाब उन सब पर आता है जो उस कौम में होते हैं फिर उनके आमाल के अनुसार उठाया जायेगा। (बुखारी७१०८ मुस्लिम २८७९)

256– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ، وَالْحَجِّ ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ [متفق عليه:8،16]

२५६. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इस्लाम को बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गयो है इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ काइम करना, जकात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना। (बुखारी १६, मुस्लिम ८)

257– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيمَا أَحَبَّ وَكَـــرِهَ مَا لَـــمْ يُؤْمَرْ بِمَعْصِيَةٍ ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ ؛ فَلَا سَمْعَ وَلَا طَاعَةَ [متفق عليه:1839،7144]

२५७. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी एताअत करना जरूरी है उन चीज़ों में भी जिन्हें वह पसन्द करे और उनमें भी जिन्हें वह नापसन्द करे जब तक उसे गुनाह करने का हुक्म न दिया जाये कि जब उसे गुनाह करने का हुक्म दिया जाये तो न सुनना बाकी रहेगा न एताअत करना। (बुखारी ७१४४, मुस्लिम १८३०)

258– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا اللهُ : لَا يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ إِلَّا اللهُ ، وَلَا يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلَّا اللهُ ، وَلَا يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلَّا اللهُ ، وَلَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلَّا اللهُ ، وَلَا يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلَّا اللهُ [البخاري: 7379]

२५८. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः गैब की पांच कुंजियां हैं जिन्हें केवल अल्लाह ही जानता है मां के पेट में क्या है केवल अल्लाह जानता है, आने वाले कल में क्या होगा केवल अल्लाह ही जानता है बारिश कब

होगी केवल अल्लाह जानता है किसी की मौत किस जगह होगी अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है और क्यामत कब काइम होगी सिर्फ अल्लाह जानता है। (बुखारी ७३७६)

259– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ الل صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ [البخاري: 6416]

२५९. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे कन्धे को पकड़ा और फरमायाः तुम इस दुनिया में अजनबी या मुसाफिर की तरह रहो। (बुखारी ६४१६)

260– عَنْ عَبْدِ اللَّـــهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ مَا أَعْلَمُ ، مَا سَارَ رَاكِبٌ بِلَيْلٍ وَحْدَهُ)) [البخاري:2998]

२६०. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जितना मैं जानता हूं अगर लोगों को भी अकेले सफर की बुराइयों के बारे में इल्म होता तो कोई सवार रात में अकेला सफर नहीं करता। (बुखारी २९९८)

261– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ مَرَّ عَلَى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ، وَقَالَ: (كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْعَلُهُ) [متفق عليه:2168،6247]

२६१. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि कुछ बच्चों के पास से उनका गुज़र हुआ तो उन्होंने उन बच्चों को सलाम किया और फरमाया नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम भी ऐसे सलाम करते थे (बुखारी २१६८ मुस्लिम ६२४७)

262– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَـــةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَـــةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)) [متفق عليه: 6389 ، 2690]

२६२. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम अधिकतर यह दुआ पढ़ते थे “अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतौं व फिल आखिरति हसनतौं व क़िना अजाबन्नार, ऐ अल्लाह हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भलाई दे और जहन्नम की आग स बचाना” (बुखारी ६३८९ मुस्लिम ६९०)

263– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (.كُنَّا نُسَافِرُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَعِبْ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ ، وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ)

[متفق عليه: 1118،1947]

२६३. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफर करते थे तो रोज़ा रखने वाला रोज़ा न रखने वाले

को बुरा नहीं समझता था और रोज़ा न रखने वाला रोजेदार को बुरा नहीं समझता था। (बुखारी १११८, मुस्लिम १६४७)

264– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّآللَّهُعَلَيۡهِوَسَلَّمَ: ((ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلَاوَةَ الْإِيمَانِ: مَنْ كَانَ اللهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا ، وَأَنْ يُحِبَّ المَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِله ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الْكُفْرِ بَعْدَ أَنْ أَنْقَذَهُ اللهُ مِنْهُ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ)) [متفق عليه: 16،43]

२६४. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तीन आदतें ऐसी हैं जिनमें यह पायी जायें तो वह ईमान की मिठास को पालेगा अल्लाह और उसके रसूल उसके नजदीक सब से ज्यादा महबूब बन जायें वह किसी से मुहब्बत केवल अल्लाह की खुशी के लिये करे वह कुफ्र में वापस जाने को इस तरह बुरा समझे जिस तरह आग में डाले जाने को बुरा समझता है। (बुखारी १६, मुस्लिम ४३)

265– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّآللَّهُعَلَيۡهِوَسَلَّمَ: ((مَا أَحَدٌ يَدْخُلُ الجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَهُ مَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ ، إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ ؛ لِمَا يَرَى مِنْ الْكَرَامَةِ))

[متفق عليه:2817 ، 1877]

२६५. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जन्नत में जाने के बाद कोई भी शख्स दुनिया में वापस आना पसन्द नहीं करेगा चाहे उसको सारी दुनिया मिल जाये लेकिन शहीद की यह तमन्ना होगी कि दुनिया में दुबारा जा कर अल्लाह की राह में दस बार कत्ल हो क्योंकि वह शहादत की इज्जत वहां देखता है। (बुखारी २८१७ मुस्लिम १८७७)

266– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: عَطَسَ رَجُلَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الْآخَرَ ، فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللهِ شَمَّتَّ هَذَا وَلَمْ تُشَمِّتْنِي ، قَالَ: ((إِنَّ هَذَا حَمِدَ اللهَ وَلَمْ تَحْمَدِ اللهَ))

[متفق عليه: 2991،6235]

२६६. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो आदमियों ने छींका तो उन दोनों में से एक ने अलहम्दुल्लिाह कहा और दूसरे ने नहीं कहा तो एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल आप ने इसका जवाब दिया और आप ने मेरा जवाब नहीं दिया तो आपने फरमाया तुम ने अलहम्दुल्लिाह कहा और इसने अलहम्दुल्लिाह नहीं कहा (बुखारी २९९१ मुस्लिम ६२३५)

267– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَا تَزَالُ جَهَنَّمُ تَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ ، حَتَّى يَضَعَ رَبُّ الْعِزَّةِ فِيهَا قَدَمَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ وَعِزَّتِكَ وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ)) [متفق عليه:2848،6661]

२६७. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जहन्नम बराबर कहेगी “और चाहिये” लेकिन जब अल्लाह अपने पैर को उसमें रख देगा तो कहेगी बस बस तुम्हारी इज्जत की कसम एक हिस्सा दूसरे हिस्से को खाये जा रहा है (बुखारी २८४८, मुस्लिम ६६६१)

268– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا ، وَاسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا ، وَأَكَلَ ذَبِيحَتَنَا ، فَذَلِكَ الْمُسْلِمُ الَّذِي لَهُ ذِمَّةُ اللهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ ، فَلَا تُخْفِرُوا اللهَ فِي ذِمَّتِهِ)) [البخاري: 391]

२६८. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी ही तरह किबला की तरफ मुंह किया और हमारे जबीहा को खाया तो वह मुसलमान है जिसके लिये अल्लाह और उसके रसूल की पनाह है तो तुम अल्लाह और उसके रसूल की दी हुयी पनाह से ख्यानत न करो। (बुखारी ३९१)

269– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (إِنَّكُمْ لَتعْمَلُونَ أَعْمَالًا هِيَ أَدَقُّ فِي أَعْيُنِكُمْ مِنْ الشَّعَرِ إِنْ كُنَّا لَنَعُدُّهَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ الْمُوبِقَاتِ) [البخاري: 6492]

२६९. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम ऐसा अमल करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से ज्यादा बारीक है तुम उसे मामूली समझते हो (बड़ा गुनाह नहीं समझते) और हम लोग नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने में इन कामों को हलाक कर देने वाला समझते थे। (बुखारी ६४९२)

270– عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ الْكَافِرَ إِذَا عَمِلَ حَسَنَةً أُطْعِمَ بِهَا طُعْمَةً مِنْ الدُّنْيَا ، وَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَإِنَّ اللهَ يَدَّخِرُ لَهُ حَسَنَاتِهِ فِي الْآخِرَةِ ، وَيُعْقِبُهُ رِزْقًا فِي الدُّنْيَا عَلَى طَاعَتِهِ)) [مسلم: 2808]

२७०. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक काफिर जब दुनिया में कोई नेक काम करता है तो नेकी के बदले में उसको खाना खिलाया जाता है आर जब मोमिन दुनिया में कोई काम करता है तो अल्लाह तआला उसकी नेकियों को आखिरत के लिये जमा कर लेता है और उसकी फरमाबरदारी की वजह से तुरन्त उसको दुनिया में रोजी मिलती है (मुस्लिम २८०८)

271– عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((مَنْ كَرِهَ مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَلْيَصْبِرْ ، فَإِنَّهُ مَنْ خَرَجَ مِنْ السُّلْطَانِ شِبْرًا ، مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)) [متفق عليه:1849،7053]

२७१. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अपने अमीर में कोई बात ना पसन्द करे तो सब्र करे अगर कोई उसकी एताअत से बालिश्त बराबर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (बुखारी १८४६ मुस्लिम ७०५३)

272– عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((مَنْ صَوَّرَ صُورَةً فِي الدُّنْيَا ، كُلِّفَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا الرُّوحَ ، وَلَيْسَ بِنَافِخٍ)) [متفق عليه: 2110،5963]

२७२. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स दुनिया में कोइ मूरत बनायेगा तो क्यामत के दिन उस पर जोर डाला जायेगा कि उसको जिन्दा भी करे जब कि वह उसे जिन्दा नहीं कर पायेगा। (बुखारी २११० मुस्लिम ५९६३)

273– عن ابن عباس رضي الله عنهما أنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اتَّقِ دَعْوَةَ المَظْلُومِ فَإِنَّهَا لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الله حِجَابٌ)) [متفق عليه: 19،2448

२७३. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुआज़ रजिअल्लाहो तआला अन्हु को यमन भेजा तो फरमाया मजलूम की बद्दुआ से डरते रहना क्योंकि उसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं होता। (बुखारी २४४८ मुसिल्म १६)

274– عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَعُودُهُ قَالَ: ((لَا بَأْسَ. طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ)) [البخاري: 5656]

२७४. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी बीमार की इयादत के लिये जाते तो बीमार से कहते कि, ला बास तहूरून इन्शा अल्लाह, फिक्र की बात नहीं है इन्शाअल्लाह यह मर्ज गुनाहों से पाक करने वाला है। (बुखारी ५६५६)

275– عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: (.لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُتَشَبِّهِينَ مِنْ الرِّجَالِ بِالنِّسَاءِ ، وَالْمُتَشَبِّهَاتِ مِنْ النِّسَاءِ بِالرِّجَالِ) [البخاري:5889]

२७५. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने औरत की मुशाबहत करने वाले मर्दों पर लानत की और मर्दों की मुशाबहत करने वाली औरतों पर लानत की। (बुखारी ५८८६)

276– عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْإِسْلَامِ خَيْرٌ قَالَ: ((تُطْعِمُ الطَّعَامَ ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ ، عَلَى مَنْ عَرَفْتَ ، وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ)) [متفق عليه:12 ، 39]

२७६. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कौन सा इस्लाम बेहतर है? फरमायाः खाना खिलाओ और सलाम करो जिनको तुम जानते हो और जिनको नहीं जानते हो। (बुखारी १२ मुस्लिम ३९)

277– عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ ، مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنْ اللَّبَنِ ، وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنْ الْمِسْكِ ، وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ ، مَنْ شَرِبَ مِنْهَا فَلَا يَظْمَأُ أَبَدًا)) [متفق عليه: 6579،2292]

२७७. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरा हौज़ एक महीने की दूरी के बराबर होगा उसका पानी दूध से भी ज़्यादा सफेद होगा और उसकी खुश्बू मुश्क से भी ज्यादा अच्छी होगी और उसका प्याला (कूज़ा) आस्मान के सितारों की तरह होगा जो एक बार उससे पी ले गा कभी प्यासा नही होगा (बुखारी २२९२ मुस्लिम ६५७९)

278– عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ قَتَلَ مُعَاهَدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الجَنَّةِ وَإِنَّ رِيحَهَا تُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ عَامًا)) [البخاري: 3166]

२७८. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी जिम्मी को नाहक् कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू भी नहीं पा सकेगा हालांकि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी से सूंघी जा सकती है। (बुखारी ३१६६)

279– عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللهُ بِمَا آتَاهُ [مسلم: 1054]

२७९. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स कामयाब हो गया जो इस्लाम लाया और उसको प्रयाप्त रोज़ी दे दी गयो और उसको अल्लाह ने जितना दिया उस पर कनाअत की। (मुस्लिम १०५४)

280– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمْ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ فَلْيُصَلِّ رَكْعَتَيْنِ)) [متفق عليه: 875،1170]

२८०. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई जुमा के दिन आये और इमाम खुतबा दे रहा हो तो वह दो रकअत नमाज़ पढ़ ले। (बुखारी ११७० मुस्लिम ८७५)

281– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله ﷺ قَالَ: (.نَهَى رَسُولُ الله صَلَّاللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ، وَأَنْ يُقْعَدَ عَلَيْهِ، وَأَنْ يُبْنَى عَلَيْهِ) [مسلم:970]

२८१. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने कब्र को पक्का बनाने उस पर बैठने और उस पर मकान बनाने से मना किया। (मुस्लिम ६७०)

282– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّاللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ: ((لَا تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَوْلَادِكُمْ وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَمْوَالِكُمْ لَا تُوَافِقُوا مِنْ الله سَاعَةً يُسْأَلُ فِيهَا عَطَاءٌ فَيَسْتَجِيبُ لَكُمْ)) [مسلم:3014]

२८२. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः खुद को अपने औलाद को और अपने माल के लिये बददुआ न करो क्योंकि एक घड़ी ऐसी होती है जिसमें अल्लाह तुम्हारी दुआ को कुबूल कर लेता है। (मुस्लिम ३०१४)

283– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّاللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ: ((لَا يَمُوتَنَّ أَحَدُكُمْ إِلَّا وَهُوَ يُحْسِنُ الظَّنَّ بِالله عَزَّ وَجَلَّ)) [مسلم:2877]

२८३. जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में कोई मरे तो अल्लाह के बारे में उसका गुमान अच्छा हो। (मुस्लिम २८७७)

284– عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صَلَّىٰٱللَّهُعَلَيۡهِوَسَلَّمَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ أَنْ يَعْبُدَهُ الْمُصَلُّونَ فِي جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَلَكِنْ فِي التَّحْرِيشِ بَيْنَهُمْ [مسلم:2812]

२८४. जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक शैतान इस बात से मायूस हो चुका हे कि जजीरए अरब के मुसलमान उसकी इबादत करें और लेकिन उनके बीच में झगड़ा और फितना पैदा करने में लगा हुआ है। (मुस्लिम २८१२)

285– عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قال: قال النَّبِيُّ صَلَّىٰٱللَّهُعَلَيۡهِوَسَلَّمَ : ((اشْفَعُوا تُؤْجَرُوا وَيَقْضِي اللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِـــيِّهِ مَا شَاءَ)) [متفق عليه:2627،1422]

२८५. जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सिफारिश करो इस पर तुम को सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला अपने नबी की जुबान क जरिये जो चाहेगा पूरा करेगा। (बुखारी १४२२ मुस्लिम२६२७)

286– عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قال: قال النَّبِيُّ صَلَّىٰٱللَّهُعَلَيۡهِوَسَلَّمَ : ((مَثَلُ الجَلِيسِ الصَّالِحِ وَالسَّوْءِ كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيرِ ، فَحَامِلُ الْمِسْكِ إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ

، وَإِمَّا أَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً ، وَنَافِخُ الْكِيرِ ، إِمَّا أَنْ يُحْرِقَ ثِيَابَكَ ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ رِيحًا خَبِيثَةً)) [متفق عليه: 2101،2628]

२८६. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अच्छे और बुरे साथी की मिसाल खुश्बू बेचने वाले और लोहार की तरह है। खुश्बू बेचने वाला या तो तुम को सुंघा देगा या तो तुम उस से खरीद लागे या उससे अच्छी खुश्बू पाओगे। और लोहार या तो तुम्हारे कपड़े को जला देगा या बदबूदार बू मिलेगी। (बुखारी २६२८ मुस्लिम २१०१)

287– عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا يُثْنِي عَلَى رَجُلٍ وَيُطْرِيهِ فِي مَدْحِهِ ، فَقَالَ: ((أَهْلَكْتُمْ ، أَوْ قَطَعْتُمْ ظَهَرَ الرَّجُلِ)) [متفق عليه:2663، 3001]

२८७. अबू मूसा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुना कि एक आदमी दूसरे आदमी की तारीफ कर रहा था और उसकी तारीफ में मुबालगा (बढ़ा चढ़ा कर) बात कर रहा था तो आप ने फरमाया तुम लोगों ने उस शख्स को हलाक कर दिया या उसकी पीठ को तोड़ दिया। (बुखारी २६६३ मुस्लिम ३००१)

288– عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ هِيَ كَنْزٌ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ : لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ)) [متفق عليه: 2704،6384]

२८८. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमायाः क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलिमा न बताऊं जो जन्नत के खजानों में से एक खजाना है और वह यह है “ला हौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाह”। (बुखारी २७०४ मुस्लिम ६३८४)

289– عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ أَحَبَّ اللهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللهِ كَرِهَ اللهُ لِقَاءَهُ)) [متفق عليه: 6508 ، 2686]

२८९. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अल्लाह से मिलना पसन्द करता है अल्लाह भी उससे मिलना पसन्द करता है और जो शख्स अल्लाह से मिलना नापसन्द करता है अल्लाह भी उससे मिलना पसन्द नहीं करता है। (बुखारी ६५०८ मुस्लिम २६८६)

290– عَنْ أَبِي بَكْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَكِلَاهُمَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) قِيلَ: فَهَذَا الْقَاتِلُ ، فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ ؟ قَالَ: ((إِنَّهُ أَرَادَ قَتْلَ صَاحِبِهِ)) [متفق عليه:7083، 2888]

२९०. अबू बकरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह

तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

291– عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قالَ: سَأَلتُ النَّبيَّ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْعَمَلِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: ((.الصَّلَاةُ عَلَى وَقْتِهَا)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((.بِرُّ الْوَالِدَيْنِ)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ ؟ قَالَ: ((.الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ)) [متفق عليه:5970، 85]

२९१. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा महबूब अमल क्या है? फरमाया नमाज़ को वक्त पर पढ़ना मैने पूछा फिर कौन सा अमल, फरमाया मां बाप के साथ भलाई से पेश आना, मैंने पूछा फिर कौन सा अमल, फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद करना। (बुखारी ५९७ मुस्लिम ८५)

292– عن عَرْفَجَةَ بن شُرَيْحٍ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنَّهُ سَتَكُونُ هَنَاتٌ وَهَنَاتٌ ، فَمَنْ أَرَادَ أَنْ يُفَرِّقَ أَمْرَ هَذِهِ الْأُمَّةِ وَهِيَ جَمِيعٌ فَاضْرِبُوهُ بِالسَّيْفِ كَائِنًا مَنْ كَانَ)) [مسلم:1852]

२९२. अर्फजा बिन शुरैह बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुनाः बेशक नये नये फितने पैदा होंगे तो जो शख्स इस उम्मत को बांटने

की कोशिश करे जब कि वह लोग एकजुट हो तो ऐसे शख्स को तलवार से मार दो। इस मामले में कोई भी हो। (मुस्लिम १८५२)

293– عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ: ((لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفَهُ)) [متفق عليه: 3673، 2541]

२९३. अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे असहाब को गाली मत दो अगर कोई शख्स उहद पहाड़ के बराबर सोना भो खर्च कर डाले तो उनके एक मद गल्ला के बराबर भी नहीं पहुंच सकता और न उनके आधे मद के बराबर। (मुस्लिम ३६३७ मुस्लिम २५४१)

294– عن النُّعمَانِ بنِ بَشِيرٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّىٱللَّهُعَلَيْهِوَسَلَّمَ : ((إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ عَلَى أَخْمَصِ قَدَمَيْهِ جَمْرَتَانِ يَغْلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ كَمَا يَغْلِي الْمِرْجَلُ وَالْقُمْقُمُ)) [متفق عليه: 6562 ، 213]

२९४. नौमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन सबसे हलका अज़ाब उस जहन्नमी शख्स को होगा जिसके दोनों पांव के तलवों में केवल आग की जूतियां होगी जिसकी वजह से उसका दिमाग खौलेगा जिस

तरह से मिरजल (हांडी) और कुमकुम (बर्तन का नाम) खौलता है। (बुखारी ६५२२ मुस्लिम २१३)

295– عَنْ أَبِي أَ يُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((لَا يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ ، يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هَذَا وَيُعْرِضُ هَذَا ، وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ)) [متفق عليه: 6077، 2560]

२९५. अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा बात करना छोड़ दे इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

296– عن عُمَرَ بْنَ أَبِي سَلَمَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولِ الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَا غُلَامُ سَمِّ اللهَ وَكُلْ بِيَمِينِكَ وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ)) [متفق عليه:5376 ، 2022]

२९६. उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे से कहाः ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाआ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

297– عَنْ الْمُغِيرَةِ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِنَّ كَذِبًا عَلَيَّ لَيْسَ كَكَذِبٍ عَلَى أَحَدٍ ، مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا ، فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنْ النَّارِ))[متفق عليه: 1291، 4]

२६७. मुगीरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक मेरे ऊपर झूठ बांधना किसी दूसरे पर झूठ बांधने की तरह नहीं है जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बाधा तो उसने अपना ठिकाना जहन्नम मे बना लिया। (बुखारी १२६१ मुस्लिम ४)

298– عَنْ النَّوَّاسِ بْنِ سِمْعَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ ، وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي صَدْرِكَ وَكَرِهْتَ أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ)) [مسلم: 2553]

२६८. नवास बिन समआन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी अच्छी आदत है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और लोगों को इस गुनाह की खबर होना तुम्हें नापसन्द हो। (मुस्लिम २५५३)

299– عَنْ النَّوَّاسِ بْنِ سِمْعَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يُؤْتَى بِالْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَهْلِهِ الَّذِينَ كَانُوا يَعْمَلُونَ بِهِ تَقْدُمُهُ سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَآلِ عِمْرَانَ)) [مسلم: 805]

२९९. नवास बिन समआन रजिअल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरह बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

300– عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الْعِبَادَةُ فِي الهَرْجِ كَهِجْرَةٍ إِلَيَّ)) [مسلم: 2948]

३००. मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत करने के समान है। (मुस्लिम २९४८)